HINDI

SECTION A

Question 1

Write a composition in Hindi in approximately 400 words on any ONE of the topics given below:-

निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर लगभग **400** शब्दों में हिन्दी में निबन्ध लिखिये :-

(a) नारी : माँ, बहन, पत्नी तथा बेटी हर रुप में आदरणीय है। – विवेचन कीजिए।

(b) जीवन में सुख समृद्धि पाने के लिए हर व्यक्ति अपने लिए किसी व्यवसाय को चुनना चाहता है। आप अपने लिए किस व्यवसाय को चुनना पसंद करेंगे। उसकी प्राप्ती के लिए आप क्या क्या प्रयत्न करेंगे तथा उससे देश व समाज को क्या लाभ होगा।

(c) 'मानव की अतिमहत्वाकांक्षा ने ही प्रदूषण जैसी विकराल समस्या को जन्म दिया है। इस कथन के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार प्रकट करें।

(d) आज के युग में टूटते परिवार।

(e) किसी ऐसे चलचित्र का वर्णन कीजिए जिसे आपने अपने परिवार के साथ देखा। उस चलचित्र के निर्देशन, संगीत निर्देशन, कहानी तथा कहानी से मिलने वाली शिक्षा का वर्णन करते हुए बताएं कि वह चलचित्र आपको किस कारण से बहुत अच्छा लगा।

(f) निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर मौलिक कहानी लिखिए :-

(ii) कहानी का अंतिम वाक्य **होगा** ....

................................'पिताजी के मार्गदर्शन से ही आज मैं इस योग्य बना हूँ।'

(ii) कहानी की शुरुआत नीचे लिखे वाक्य से कीजिए :

'एक दिन मेरा पडोसी''...

boduniya.com

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

(a) नारी : माँ, बहन, पत्नी तथा बेटी हर रूप में आदरणीय है –
अधिकांश छात्र–छात्राओं ने इस विषय पर निबन्ध लिखा। कुछ ने माँ का रूप बहुत विस्तार से लिखा, शेष बहन, पत्नी बेटी के बारे में कम लिखा।
निबन्ध में प्रस्तावना बहुत कम छात्र–छात्राओं द्वारा लिखी गयी।

(b) जीवन में सुख समृद्धि पाने के लिए हर व्यक्ति अपने लिए किसी व्यवसाय को चुनना चाहता है।......
इस विषय में छात्र–छात्राओं में 'व्यवसाय' शब्द के द्वारा भ्रम उत्पन्न हुआ। उन्होंने होटल खोलना, दुकान खोलना सभी बातें अपने निबन्ध में शामिल की। वास्तविक लक्ष्य नहीं बताया। 'प्रस्तावना' का अभाव भी दृष्टिगोचर था।

अध्यापकों के लिए सुझाव

– अध्यापकों को चाहिए कि निबन्ध लेखन का अभ्यास कराएं। 'प्रस्तावना' की निबन्ध के लिए आवश्यकता समझाऐं।
– निबन्ध के प्रत्येक पहलू पर लेखन आधारित कार्य करने के लिए छात्रों को प्ररित किया जाए।

(c) ''मानव की अतिमहत्वाकांक्षा ने ही प्रदूषण जैसी विकराल समस्या को जन्म दिया है।''
इस विषय पर परीक्षार्थियों ने बहुत अधिक व बहुत अच्छा लिखा। आज की ज्वलन्त समस्या पर होने के कारण विषय की जानकारी उत्तम श्रेणी की रही। कहीं–कहीं 'महत्वकांक्षा' का परिप्रेक्ष्य अस्पष्ट रहा।

(d) आज के युग में टूटते परिवार – अधिकांशतः परीक्षार्थियों ने संयुक्त परिवार व एकल परिवार के हानि–लाभ लिखे। परिवार के टूटने के मुख्य कारण कम लोगों द्वारा बताए गए।

(e) परीक्षार्थियों ने इस विषय पर भी अधिक लिखा। 'थ्री इडिएटस' व 'पी के' फिल्म की कहानी बहुत अच्छे ढ़ंग से लिखी। परिवार के साथ का अनुभव कुछ लोगों से लिखा। निर्देशन व संगीत निर्देशन कैसा था इस पर बहुत कम लिखा गया।

(f) (i) अनेक छात्र–छात्राओं ने इस विषय पर लिखा। पिता द्वारा पाए मार्गदर्शन का वर्णन किया, परन्तु कुछ छात्रों ने अन्तिम वाक्य जोड़ना आवश्यक नहीं समझा।

(ii) इस विषय पर बहुत कम लिखा गया।

- निबन्ध के प्रत्येक पहलू पर लिखा जाए। कोई भी पहलू अनदेखा न रहे। कक्षा में प्रत्येक पहलू का अभ्यास कराने हेतु निबन्ध लेखन कराया जाए।
- कहानी लेखन हेतु इस तरह के विषयों हेतु कक्षा में अभ्यास कराया जाये जिससे ये स्मरण रहे की अन्तिम पंक्ति दिए जाने पर लिखना आवश्यक है।
- कहानी लेखन में विषय ध्यान से पढ़ा जाए। पंक्ति लिखकर वर्णन प्रारम्भ करने का अभ्यास कराया जाना चाहिये।

MARKING SCHEME

Question 1

(a) **भूमिका** :– नारी दया, माया, ममता, करुणा और प्रेम की मूर्ति, विधाता की अद्भुत रचना ....गुणों का भण्डार ....माँ, बहन, पत्नी, बेटी हर रुप में आदरणीय ....काम काज में मन्त्री ....भोजन तैयार करके देने वाली माता .... शयन के समय अप्सरा ....धर्म के अनुसार चलने वाली .... क्षमा जैसे गुणों की स्वामिनी ....वीर साहसी पुत्रों की जन्म दात्री ....माँ के रुप ममता की मूर्ति ....पत्नी के रुप सहनशीलता ....बहन के रुप में सहनशीलता, लाड के साथ..............................बुढ़ापे मे लड़के से ज्यादा मददगार ....अनन्त गुणों का भण्डार ....हर रुप मे आदरणीय ....उपसंहार

(b) **प्रस्तावना** :– ....प्रत्येक व्यक्ति सुख सुविधा चाहता है, ...जीवन बिताने के लिये कोई न कोई काम करता है ....विद्यार्थी कौन से व्यवसाय चुनना चाहता है .... उसके लिए क्या क्या प्रयास ....देश व समाज को क्या लाभ ....उपसंहार।

(c) **भूमिका** :– मानव की महत्वाकाक्षाएँ क्या है ....उन इच्छाओं के कारण कौन कौन से नवीन सा ....उन साधनों के लाभ ....उनके प्रयोग से प्रदूष की समस्या ....प्रयोग कहाँ तक उचित .... उपसंहार।

(परीक्षार्थी की अपनी इच्छा है वह इसके पक्ष मे लिखे या विपक्ष में)

(d) भूमिका :– टूटते परिवार से क्या अभिप्राय ....आज किन कारणों से परिवार टूट रहे हैं ....मनुष्य का महत्वाकांक्षी होना ....दूर दूर नौकरियाँ मिलना ....एक या दो बच्चे ....आपस में विचारों का न मिलना ....स्वतन्त्रता से रहने की इच्छा..................अधिक पैसे कमाने की इच्छा ....माता–पिता व घर जिम्मेदारियों से बचना ....माता पिता व बच्चों की सोच का अन्तर। समाधान के लिए माता पिता तथा बच्चों के मिलकर रहने के लाभ सोचना ....घर

bodhiya.com

	की आधी बाहर की सारी एक बराबर इस विषय को समझना ....केवल धन के पीछे नही भागना ... .कम रोक टोक करना ....एक दूसरे के काम आना ... उपसंहार।
	(परीक्षार्थी माँ बाप से बच्चों का अलग होना या पति पत्नी का अलग होना किसी भी विषय पर लिख सकता है। दोनों ही मान्य होंगे)
(e)	भूमिका :– मनोरंजन के साधन कौन से..................चलचित्र क्या है ....कब और कैसे परिवार के साथ कार्यक्रम बना ....कौन सी फिल्म देखी ....निर्देशन किसने किया .... कैसा निर्देशन था ....संगीत कैसा था ....कहानी कैसी ....समाज पर क्या प्रभाव ....क्या अच्छा लगा .... उपसंहार।
(f)(i)	कहानी मौलिक होनी चाहिए तथा अन्तिम वाक्य ''पिताजी के र्माग र्दशन से ही आज मैं इस योग्य बना हू'' ही होना चाहिए।
(ii)	कहानी मौलिक होनी चाहिए तथा कहानी की शुरुआत :– एक दिन मेरा पड़ोसी ....से ही होनी चाहिए।

Question 2

Read the following passage and briefly answer the questions that follows:-

निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर, अन्त में दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :–

पहला सुख निरोगी काया अर्थात् सबसे बड़ा सुख स्वस्थ शरीर है । अस्वस्थ व्यक्ति न अपना भला कर सकता है, न घर का, न समाज का और न ही देश का ।

प्राचीन काल से ही उत्तम स्वास्थ्य के लिए व्यायाम के महत्त्व को पहचाना गया है । बड़े–बड़े मनीषियों ने व्यायाम को उत्तम स्वास्थ्य का आधार बताया है ।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों का मूल आधार स्वास्थ्य है । जहाँ तक इस सफलता की बात करें तो मानव–जीवन की सफलता भी इसी सूत्र में छिपी है ।

बुध्दिमत्तापूर्ण कार्य तथा सफलता के लिए परिश्रम भी स्वस्थ शरीर से ही संभव होता है । अतः स्वस्थ मस्तिष्क तथा स्वस्थ बुध्दि के लिए हमें शरीर को स्वस्थ रखना चाहिए ।

स्वास्थ्य और सफलता का गहरा नाता है । सफलता के लिए व्यक्ति को परिश्रम करना आवश्यक है और अस्वस्थ व्यक्ति परिश्रम नहीं कर सकता । स्वस्थ मस्तिष्क से ही मनुष्य में सोचने–विचारने की शक्ति आती है, वह अपना हानि–लाभ सोच सकता है । जिस देश के व्यक्ति कमज़ोर व अस्वस्थ होंगे वह देश कभी उन्नत नही हो सकता । एक विद्यार्थी तभी श्रेष्ठ विद्यार्थी होगा जब वह स्वस्थ होगा । चाहे विद्यार्थी हो या अध्यापक, व्यापारी हो या वकील, कर्मचारी हो या शासक, नौकर हो या स्वामी, प्रत्येक को अपने कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए स्वस्थ होना आवश्यक है ।

इस स्वास्थ्य की रक्षा के लिए मनीषियों ने , वैद्यो–डॉक्टरों ने तथा योगी महात्माओं ने अनेक साधन बताए हैं – जिसमें शुध्द वायु, प्रातः भ्रमण, संयमित जीवन, सच्चरित्रता, निश्चिन्तता, सन्तुलित भोजन, गहरी नींद तथा व्यायाम प्रमुख है । इनमे भी व्यायाम ही उत्तम स्वास्थ्य की मूल जड़ है । आलस्य रूपी महारिपु से छुटकारा पाने के लिए भी व्यायाम को अपनाना आवश्यक है । व्यायाम व्यक्ति का चुस्त–दुरुस्त रखता है । व्यायाम शारीरिक व बौध्दिक दो प्रकार का होता है ।शारीरिक व्यायाम के लिए दण्ड–बैठक, खुली हवा में दौड़ लगाना, नदी में

bodhiyla.com

तैरना, घुड़सवारी करना, कुश्ती लड़ना तथा विभिन्न प्रकार के खेल, जैसे – हाकी कबड्डी, रस्साकसी, बैडमिण्टन आदि खेले जा सकते है । बौध्दिक व्यायाम के अर्न्तगत शब्द पहेलियाँ, बुध्दि–परीक्षण के प्रश्न तथा शतरंज आदि खेल आते हैं ।

स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होने के कारण ही आज व्यक्ति फिर योग की ओर मुड़ रहे हैं । योगासनों का महत्त्व बढ़ता जा रहा है । इन योगासनों के द्वारा शरीर की माँसपेशियाँ पुष्ट होती हैं । साथ ही मनुष्य को एकाग्रचित्तता की शक्ति प्राप्त होती है । व्यायाम करने व योगासनों से मनुष्य जल्दी बूढ़ा नही होता । उसकी पाचन क्रिया ठीक रहती है, रक्त–संचार नियमित होता है जिससे मस्तिष्क स्वस्थ रहता है । मनुष्य में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता जैसे गुणों का समावेश होता है जो मनुष्य की सफलता की कुंजी है।

जो सुखों का उपभोग करना चाहता है तथा जीवन में सफलता रूपी कुंजी पाना चाहता है उसे स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना चाहिए ।

प्रश्न :–

(a) 'पहला सुख निरोगी काया' से आप क्या समझते हैं ? स्वास्थ्य नियमों का पालन करने से क्या लाभ होता है ?

(b) स्वास्थ्य और सफलता का आपस में गहरा नाता किस प्रकार है ?

(c) स्वास्थ्य रक्षा के लिय किसने और क्या साधन बताए ?

(d) शारीरिक व बौद्धिक व्यायाम से आप क्या समझते हैं ? ये किस प्रकार किये जाते हैं ?

(e) योग साधनों का महत्व क्यों बढ़ रहा है तथा इस योग साधना के क्या लाभ हैं ?

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

(a) अपठित गद्यांश अधिकतर छात्रों की समझ में आया। 'पहला सुख निरोगी काया' का अर्थ छात्रों ने अपने अनुसार स्पष्ट किया व इसमें वे सफल भी रहे।

(b) अधिकतर छात्रों ने प्रश्न का उत्तर अच्छी तरह दिया।

(c) स्वास्थ्य रक्षा के साधनों में प्रश्न–पत्र के अलावा भी जानकारियाँ दी गयी। छात्रों को प्रश्न–पत्र के आधार पर ही उत्तर देने के लिये प्रेरित करना करना चाहिये।
उनको बताना चाहिए कि पढी गयी बात को अपने अनुसार बदल कर लिखें।

(d) शारीरिक व बौद्धिक व्यायाम पूछे जाने पर अधिकांश छात्रों ने दोनों के बारे में जानकारी नहीं दी। कुछ ने शारीरिक व्यायाम तो बताया परन्तु बौद्धिक व्यायाम नहीं लिखा।

(e) योग के साधनों का महत्व, लाभ, छात्र–छात्राओं ने प्रश्नपत्र के अनुसार अच्छी तरह से लिखा। प्रत्येक बिन्दु पर उत्तम तरीके से लिखा गया।

अध्यापकों के लिए सुझाव

– शिक्षकों को चाहिए कि अपठित गद्यांश के उत्तर लिखवाते समय प्रश्नानुसार उत्तर लिखने का अभ्यास अवश्य करवायें।
– छात्रों को निर्देश दें कि वे किसी भी पहलू को अनदेखा न छोड़ें। हर बिन्दु पर ध्यान दें।
– उत्तर को अपनी भाषा में लिखने का अभ्यास कराऐं।

bodhiyla.com

MARKING SCHEME

Question 2

(a) पहला सुख निरोगी का अभिप्राय है कि इस संसार में सबसे बड़ा सुख शरीर का स्वस्थ होना है। क्योंकि अस्वस्थ व्यक्ति न तो अपना भला कर सकता है, न अपने परिवार का, न ही देश व समाज का भला कर सकता है। स्वास्थ्य के नियमों का पालन करने से व्यक्ति हृष्ट पुष्ट रहता है। सुखों का भोग करता है और जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

(b) स्वास्थ्य और सफलता का गहरा नाता इस प्रकार है कि सफलता के लिए मेहनत आवययक है। अस्वस्थ व्यक्ति तो मेहनत कर नहीं सकता। स्वस्थ मस्तिष्क से ही मनुष्य में सोचने विचार करने की शक्ति आती है। वह अपनी हानि लाभ सोच सकता है। जिस देश के लोग कमजोर व अस्वस्थ होंगे वह देश कभी उन्नति नहीं कर सकता। एक विद्यार्थी तभी श्रेष्ठ विद्यार्थी बन सकता है जब वह स्वस्थ होगा। विद्यार्थी ही क्यों अध्यापक, व्यापारी, वकील, कर्मचारी या कोई शासक, कोई भी मालिक या नौकर हर किसी को अपने कार्य की सफलता के लिए स्वस्थ होना जरुरी है।

(c) स्वास्थ्य रक्षा के लिए बड़े बड़े वैद्यों–डॉक्टरों मनीषियों तथा योगी महात्माओं ने अनेक साधन बताए हैं जिनमें शुध्द हवा, सुबह की सैर, संयमपूर्ण जीवन, अच्छा चरित्र, निश्चिन्तता, सन्तुलित भोजन, पूरी नींद तथा व्यायाम प्रमुख हैं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए व्यायाम इन सब से उत्तम है।

(d) जो शरीर को ताकत व शक्ति प्रदान करे वह शारीरिक व्यायाम तथा जो मन को प्रसन्न व स्वस्थ रखे तथा बुध्दि को कुशाग्र करे वह बौध्दिक व्यायाम है।

शारीरिक व्यायाम के लिए खुली हवा में दौड़ लगाना, दण्ड बैठक लगाना, नदी में तैरना, घुड़सवारी करना तथा विभिन्न प्रकार के खेल खेले जा सकते हैं जैसे हॉकी, कबड्डी, रस्साकशी तथा बैडमिण्टन आदि।

बौध्दिक व्यायाम के लिए शब्द पहेलियाँ बूझना, बुध्दि परीक्षण के प्रश्नों के उत्तर देना तथा शतरंज आदि खेल खेले जा सकते हैं।

(e) आजकल लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति बहुत जागरुक हो रहे हैं। इस लिये योग साधनों की ओर मुड़ रहे हैं। इन योग साधनों से शरीर की मांस पेशियाँ पुष्ट होती हैं, मनुष्य को एकाग्रचित्तता की शक्ति प्राप्त होती है। इससे उसकी पाचन क्रिया ठीक रहती है, रक्त संचार नियमित होता है। वह जल्दी बूढ़ा नहीं होता। व्यक्ति का मस्तिष्क स्वस्थ रहता है उसमें आत्म विश्वास बढ़ता है, आत्म निर्भरता आ जाती है। जो मनुष्य के जीवन को सफलता की ओर ले जाती है।

bodhiyla.com

Question 3

(a) Correct the following sentences :-

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखें:-

(i) जो काम करो वह पूरा जरुर करो।

(ii) पिता का पुत्र में विश्वास है।

(iii) उसे मृत्युदण्ड की सजा मिली है।

(iv) वह गुणवान महिला है।

(v) सभी कार्यालय में उपस्थिति कम है।

(b) Use the following idioms in sentences of your own to illustrate their meaning:-

निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए वाक्यों में प्रयोग कीजिए : -

(i) फूला न समाना।

(ii) कान भरना।

(iii) पानी में आग लगाना।

(iv) श्री गणेश करना।

(v) लोहे के चने चबाना।

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

(a) (i) वाक्य संशेधन में छात्रों ने व्याकरण और वाक्य रचना संम्बन्धी अशुद्धियाँ की। कुछ ने अनावश्यक परिर्वतन कर के वाक्य शुद्ध करने का प्रयत्न किया, कुछ ने 'भी' जोड़कर शुद्ध किया जो गलत था। मात्रा सम्बन्धी गलतियाँ भी मिलीं।

(ii) कारक का परिपक्त ज्ञान न होने के कारण कुछ छात्रों ने गलतियाँ करीं।

(iii))कौनसा शब्द स्त्रीलिंग है और कौनसा पुल्लिंग, इसका ज्ञान कुछ छात्रों को नहीं था। संशोधन के नियमों की उपेक्षा कर, मनमाना हेर फेर करके वाक्य पुनः लिख दिया गया।

(iv)अधिकांश स्त्रीलिंग के शब्दों में प्रयुक्त विशेषण सही लिखा गया था। कुछ छात्रों ने 'गुनवती' के स्थान पर 'गुनवनती' का प्रयोग किया

(v) 'वचन'के अनुसार कक्षा में वाक्य परिवर्तन करना सिखाया जाए। कुछ छात्रों ने बहुवचन का प्रयोग न करके पदों में हेर फेर करके लिख दिया, या बिंदु लगाने में चूक गए।

(b) (i) मुहावरा 'फूला न समाना' अधिकांश परीक्षार्थियों ने समझा व सही प्रकार से वाक्य प्रयोग किया।

(ii) 'कान भरना' मुहावरे का भी अधिकांश छात्रों ने उचित व सही ढ़ंग से प्रयोग किया।

(iii)'पानी में आग लगाना' अधिकांश परीक्षार्थियों ने वाक्य गलत बनाए। शायद वे मुहावरे का अर्थ नहीं समझ पाए।

(iv) श्री गणेश करना– मुहावरा बहुत से छात्रों द्वारा 'पूजा' के सन्दर्भ में लिया गया। प्रातः वन्दना के अर्थ में अधिकांश छात्रों ने इस मुहावरे का अर्थ समझा व वाक्य बनाया।

(v) 'लोहे के चने चबाना'–अधिकांश छात्रों ने सही वाक्य बनाए। कुछ परीक्षार्थियों ने वाक्य में मुहावरे के अर्थ का प्रयोग किया।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- कक्षा में व्याकरण का अभ्यास नियमानुसार कराया जाना चाहिए।
- अभ्यास के साथ–साथ, समय समय पर व्याकरण की परीक्षा ले। इससे व्याकरण शुद्धि पर पकड़ बनी रहेगी।
- 'विशेषण' की जानकारी देकर स्त्रीलिंग व पुलिंग शब्दों का प्रयोग का अभ्यास कराया जाए। शब्दकोश में वृद्धि की जाए।
- कक्षा में पाठ में आए मुहावरों के वाक्य प्रयोग का अभ्यास कराया जाए।
- कक्षा में मुहावरों के अर्थ समझाए जाऐं व वाक्य बनवाए जाऐं।
- बहुत से छात्र केवल अर्थ ही लिख देते हैं या अर्थ का प्रयोग कर वाक्य बनाते हैं। कक्षा में इस पर ध्यान दिया जाए।

bodhiyla.com

MARKING SCHEME

Question 3

(a)(i) जो काम करो उसे पूरा जरुर करो।

(ii) पिता का पुत्र पर विश्वास है।

(iii) उसे मृत्युदण्ड मिला है।

(iv) वह गुणवती महिला है।

(v) सभी कार्यालयों में उपस्थिति कम है।

(b)(i) बहुत खुश होना।

वाक्य : बहुत दिनों बाद मित्र से मिलकर राकेश फूला न समाया।

(ii) चुगली करनी

वाक्य : रमेश अपने मालिक के हर समय कान भरता रहता है जिसके परिणाम स्वरुप ऑफिस के अन्य लोगों को डाँट खानी पड़ती है।

(iii) शान्त वातावरण को अशांन्त करना।

वाक्य : एक उपद्रवी व्यक्ति से गाँव वालों ने कहा कि तुम अपनी चतुराई दिखाकर पानी में आग लगाने का काम करते हो।

(iv) कार्य प्रारम्भ करना।

वाक्य : आज मोहन ने अपनी नई दुकान का श्री गणेश कर दिया।

(v) बहुत कठिन कार्य।

वाक्य : जीवन में सफलता पाने के लिए अकसर लोहे के चने चबाने पड़ते हैं।

bodhiyla.com

SECTION B

काव्य तरंग

Question 4

सूरदास ने विभिन्न रुपों में अपने आराध्य के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है। 'विनय और भक्ति' के आधार पर सूरदास की भक्ति का परिचय उदाहरण सहित दीजिए। [12½]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

इस प्रश्न को परीक्षार्थियों ने उचित ढ़ंग से लिखने का प्रयास किया किन्तु सूरदास की भक्ति का परिचय देने में पूर्ण सफल नहीं दिखे। सूर की भक्ति और उनके आराध्य, दोनों पर चर्चा कम की गयी। कुछ छात्र पद के अनुसार भवार्थ बताते रहे। प्रश्न के प्रत्येक पक्ष पर चर्चा नहीं करी गयी।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- कक्षा में जिस कवि को पढ़ाया जाय उसका संक्षिप्त पचिय बताते हुए भक्ति भावना व भाषा पर भी चर्चा की जाए।
- समयानुसार उचित विधि से प्रश्न का उत्तर लिखने का अभ्यास कक्षा में कराया जाए।
- सगुण–निर्गुण, साकार–निराकार 'सखाभाव' या 'दास्यभाव', इस पर स्पष्ट रूप से चर्चा की जाए।

MARKING SCHEME

Question 4

सूरदास हिन्दी सगुण काव्य धारा की कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। कृष्ण भक्ति का प्रचार करने वाले प्रमुख रूप से चैतन्य महाप्रभु तथा वल्लभचार्य हैं। वल्लभचार्य ने कृष्ण भक्ति का बहुत अधिक प्रचार किया और भक्ति के क्षेत्र में पुष्टिमार्ग की स्थापना की थी जिसका अर्थ है श्री कृष्ण भगवान की कृपा ही पुष्टि है। सूरदास इस शाखा के सूर्य माने जाते हैं। इन्होंने कृष्ण की लीलाओं से सम्बन्धित बहुत से पद लिखे हैं। इनके काव्य में भगवान के लोकरंजक रूप का वर्णन है। सूरदास ने सगुण भक्ति के महत्त्व को प्रकट किया है। कृष्ण के साथ सखा भाव को प्रदर्शित किया है। सूर शृंगार और वात्सल्य रस के कवि है। इनके काव्य की भाषा सरस ब्रजभाषा है। सूरदास का काव्य गीतिकाव्य है जो मुक्तक शैली का अद्‌भुत संगम है। सूर प्रारम्भ में निराकार ब्रह्मा की उपासना करते थे परन्तु अगोचर होने के कारण यह उपासना इन्हें लुभा नहीं पाई।

सूरदास जी कहते हैं कि जिस पर ईश्वर की कृपा होती है वह असंभव कामों को संभव कर देता है। इसीलिए सूरदास श्रीकृष्ण की भक्ति को अपने जीवन का आधार मानते हैं।

''जाकी कृपा पंगु गिरि लाघै, अंधे कूँ सब कुछ दरसाई।
बहिरो सुनै मूक पंनि बोले, रेक चले सिर छत्र धराई।।''

इस पद में सूरदास ने यह बात बड़े अच्छे ढंग से दर्शायी है कि भक्त अपने स्वामी की भक्ति में जब सब कुछ अर्पित कर देता है तो उसे चमत्कारिक लाभ पहुँचता है। वे श्रीकृष्ण के चरणों की वन्दना करने के लिए कहते हैं। उनके चरणों की वन्दना का प्रताप इतना अधिक है कि लंगड़ा व्यक्ति भी पर्वत को पार कर सकता है। अंधा व्यक्ति आँखें पाकर सब कुछ देख सकता है। बहरे में इतनी शक्ति आ जाती है कि वह सब कुछ सुनने लगता है। गूँगा व्यक्ति बोलने लगता है। उन्होंने श्रीकृष्ण के प्रति अपना अनन्य भक्ति भाव प्रकट किया है। नवधा भक्ति को ईश्वर प्राप्ति का आधार बताया है जिसमें ईश्वर के चरणों की सेवा करना भी है। इसीलिए कहते हैं –

''चरण कमल बंदौ हरिराई।''

सूरदास ने निराकार ब्रह्मा की भक्ति की तुलना गूँगे के मीठे फल से की है। गूँगे को मीठा फल खिला दो तो वह उसके स्वाद को अनुभव तो करता है लेकिन बता नहीं सकता।

''ज्यों गूँगे मीठे फल को रस अंतरगत ही भावै।''

सूरदास सगुण भक्ति के उपासक थे इसलिए उन्होंने ईश्वर के रूपयुक्त आकार, अवतार और लीलाओं का वर्णन किया है। इनकी भक्ति पूर्ण रूप से प्रेम पर आधारित है। इनके मत में कोरा ज्ञान ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता। जो मन और वाणी से अगोचर है उसका वर्णन करना बहुत कठिन है। सूर कहते हैं –

''अविगत–गति कछु कहत न आवै।''

जिसे जाना ही न जा सके उसका वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। निर्गुण ब्रह्मा की उपासना उपासक को सन्तोष और आनंद तो दे सकती है पर वह उसे मन से समझ नहीं सकता और वाणी से प्रकट नहीं कर सकता। निर्गुण काव्य धारा के लोग ईश्वर के अवतार को मान्यता नहीं देते। उन्होंने ईश्वर को इन्द्रियों के अनुभव की वस्तु न मानकर उसे ज्ञान के द्वारा अनुभव की जाने वाली वस्तु कहा है। ईश्वर को ज्ञान और अनुभव से प्राप्त किया जा सकता है । उसे रूप और गुण से रहित माना है। इसी मत का खण्डन सूर ने अपने पद में किया है।

''रूप–रेख–गुन–जाति–जुगति बिनु, निरालम्ब कित धावै।''

मन जिसकी कल्पना नहीं कर सकता तथा वाणी जिसकी अभिव्यक्ति नहीं कर सकती उस ब्रह्मा की उपासना कैसे की जाए? उसमें इन्द्रियाँ एकाग्र होकर उपासना में लीन नहीं हो सकती। सांसारिक जीवन में अपने उत्तरदायित्व को निभाते हुए निराकार ब्रह्मा की उपासना बहुत कठिन है। निराकार ब्रह्मा की अनुभूति केवल ज्ञानी लोग ही कर सकते है, साधारण व्यक्ति नहीं। निराकार ब्रह्मा की उपासना में कई जटिलताएँ भी हैं।

bodhiyla.com

''सब विधि अगम विचारहि तातें, सूर सगुन–पद गावै।''

इसलिए सूर ने निराकार ब्रह्मा की उपासना की अपेक्षा साकार ब्रह्मा की उपासना पर बल दिया है। प्रेम, भक्ति और विनम्र प्रार्थना ही ईश्वर तक पहुँचा सकती है।

सूरदास कृष्णाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि थे। इसलिए वे कहते हैं कि उनका मन कृष्ण भक्ति करने के अतिरिक्त कहीं से भी सुख प्राप्ति नहीं कर सकता। कृष्ण की शरण ही उन्हें सुख और शान्ति प्रदान कर सकती है।

''मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।''

जैसे श्रेष्ठ वस्तु पा लेने पर कोई भी तुच्छ वस्तु की इच्छा नहीं करता वैसे ही भगवान कृष्ण की भक्ति को छोड़कर उन्हें कहीं सन्तोष नहीं मिलता। उन्होंने अपने मन की तुलना जहाज पर बैठे पक्षी से की है। अथाह सागर में जब पानी का जहाज जा रहा है, उस पर बैठा पक्षी कहीं पर भी जाए पर चारों ओर अपार जल देखकर पुनः जहाज पर आकर बैठ जाता है। इसी प्रकार यह संसार एक अथाह सागर है जिसमें जीव काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि से आच्छादित होकर डूब जाता है। अगर वह भगवान रूपी जहाज का आश्रय ले लेता है तो तर जाता है। कवि का मानना है कि अगर संसार सागर में मैं भटक भी जाऊँ, अन्त में आप (श्रीकृष्ण) के पास ही आऊँगा।

''परम–गंगा को छाँडि पियासौ, दुरमति कूप खनावै।''

इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने इस तथ्य की ओर संकेत किया है कि गंगा के किनारे रहकर दुर्बुध्दिग्रस्त व्यक्ति ही प्यास बुझाने के लिए, कुआँ खोदेगा। कमल जैसे नेत्रों वाले श्रीकृष्ण की भक्ति को छोड़कर अन्य देवी–देवताओं की आराधना क्यों की जाए। कमल का रसपान करने वाले भँवरें को कड़वे फल क्यों अच्छे लगेंगे! प्रभु रूपी कामधेनु को छोड़कर अन्य देवी–देवताओं रूपी बकरी का दूध कौन दुहावेगा।

इस प्रकार कृष्ण भक्त कवियों में सूरदास जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

i) विभिन्न रूपों में आराध्य के प्रति अभिवयक्ति

ii) भक्ति परिचय (सखाभाव एवं पुष्टि मार्गी)

Question 5

'रहीम दास जी दैनिक जीवन से उदाहरण लेकर नीति की गूढ़ बात को आसानी से समझा देते हैं। '– इस आधार पर रहीम के दोहों की विशेषता बताते हुए उनकी काव्य शैली पर प्रकाश डालिए। [12$^{1/2}$]

<u>परीक्षकों की टिप्पणियाँ</u>

रहीमदास के विषय में परीक्षार्थियों ने उचित तरीके से लिखा। प्रश्न में स्पष्ट पूछा गया था कि 'रहीम के दोहों की विशेषताएँ व काव्य शैली...... कुछ छात्र–छात्राओं ने दोहों की विशेषताएं लिखी पर काव्य शैली नहीं समझा पाए।

कवित्व भाग पर ध्यान नहीं दिया। उदाहरण लिखने के साथ–साथ व्याख्या भाग लिखना आवश्यक होता है।

<u>अध्यापकों के लिए सुझाव</u>

– कक्षा में कवि परिचय के साथ भाषा–शैली एवं रचनाओं की विशेषताऐं भी समझाऐं।
– भाषा–शैली का स्पष्टीकरण कक्षा में दिया जाना आवश्यक है।
– प्रश्न के प्रत्येक भाग को अहम मान कर उस पर विचाराभिव्यक्ति करने का अभ्यास कक्षा में कराया जाए। काव्य के प्रश्न में कविता भाग लिखना आवश्यक बताया जाय।

bodhiyla.com

MARKING SCHEME

Question 5

रहीम अपने नीतिपरक दोहों के लिए विख्यात हैं। रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना था। वे जीवनपर्यन्त अकबर के दरबार में रहे। मुसलमान होते हुए भी हिन्दु धर्म के प्रति उनका दृष्टिकोण उदार था। रहीम ने जीवन में अनेक उतार–चढ़ाव देखे थे, इसलिए उन्हें संसार का गहन अनुभव था। उनके दोहे कहावतों और लोकोक्तियों का रूप ग्रहण कर चुके हैं। आज भी लोग उनको उदाहरणों के रूप में प्रयोग कर अपनी बात को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं। रहीम को लोक संस्कृति, लोक व्यवहार और शास्त्रों का गहरा ज्ञान था। उन्होनें इस ज्ञान को सामान्य भाषा में बड़ी सहजता के साथ अपने दोहों में व्यक्त किया है। वे साधारण मनुष्य के दैनिक जीवन से उदाहरण लेकर नीति की गूढ़ बात को आसानी से समझा देते हैं। उनके दोहों में जीवन की ऐसी सच्चाइयाँ छिपी हुई हैं जिनका पग–पग पर जन मानस को अनुभव होता है। रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में – ''रहीम के दोहों में मार्मिकता है। उनके भीतर से एक सच्चा हृदय झाँक रहा है।''

रहीम ने अपनी बात समझाने के लिए सटीक दृष्टान्तों का प्रयोग किया है। वे कहते हैं कि नीच लोगों का साथ करने से अच्छे और बड़े लोगों की भी बदनामी होती है। जिस प्रकार एक मदिरा बेचने वाली के हाथ में यदि दूध का पात्र हो तो लोग उसे भी मदिरा ही समझते हैं।

रहिमन नीचन संग बसि, लगत कलंक न काहि।
दूध कलारिन हाथ लखिय मद समुझै सब ताहि।।

बुरा करने का फल बुरा ही होता है। दूसरे का बुरा चाहकर सुख की कामना करना व्यर्थ है क्योंकि बुराई के बदले बुराई ही मिलती है। मनुष्य दूसरे का बुरा करके उससे अच्छाई की इच्छा रखता है, पर यह असम्भव है – यदि हम नीम का पेड़ लगाएँगे तो उसमें आम का फल कहाँ से लगेगा?

यदि व्यक्ति में विद्या, बुध्दि, धर्म, यश और दान जैसे गुण नहीं हैं तो उसका इस पृथ्वी पर जन्म लेना व्यर्थ है। वह बिना पूँछ और सींग के पशु के समान है। कवि कहते हैं कि हर व्यक्ति का समय आता है जब उसकी पूछ होती है। वर्षा ऋतु में कोयल की मीठी वाणी का महत्त्व न होने के कारण वह मौन धारण कर लेती है।

वर्षा ऋतु में मेंढक अपनी टर्र–टर्र की ध्वनि को चारों ओर फैलाते है क्योंकि अब उनका समय है ।

पेड़ की जड़ को सींचने से ही पूरा पेड़ सिंच जाता है, यदि हम पेड़ की जड़ को न सींचकर उसके अलग–अलग भागों को सींचेगे तो पूरे पेड़ को लाभ नही पहुँचा सकता । इसी प्रकार किसी भी कार्य के मुख्य आधार की देख–भाल करने से उस कार्य में सफलता अवश्य मिलती है।

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहि सींचिबो, फूलै फलै अघाय।।

रहीम ने हर चीज की अति को बुरा बताया है । अति होने से वस्तु और व्यक्ति का महत्त्व कम हो जाता है । यदि किसी से अधिक परिचय हो जाता है तो अत्यधिक मेलजोल के कारण एक दूसरे के प्रति अनादर तथा अरुचि पैदा होने लगती है । मलय पर्वत पर चन्दन के बहुत से वृक्ष लगे रहते है । चंदन की लकड़ी कीमती मानी जाती है पर मलय पर्वत पर रहने वाली भीलनी को उसके महत्त्व का ज्ञान नहीं । वह उससे अन्य लकड़ियों की भाँति जलाने का काम लेती है ।

अति परचै ते होत है, अरुचि , अनादर भाय।
मलयागिरि की भीलनी, चंदन देत जलाय।।

रहीम ने अपने सूक्ष्म अवलोकन को निम्नलिखित दोहे में प्रकट किया है। खैरियत, खून, खाँसी, खुशी, दुश्मनी, प्रेम और मदिरापान को मनुष्य छिपाना भी चाहें तो छिप नहीं सकते बल्कि वे और ज़्यादा प्रकट होकर

सामने आते हैं जिससे सभी उन्हें जान लेते हैं। खैरियत मालूम हो जाती है, खून एक न एक दिन प्रकट हो जाता है। मदिरापान को भी मनुष्य छिपा नहीं सकता।

खैर खून खाँसी, बैर प्रीति मदपान। रहिमन दाबे न दबैं, जानत सकल जहान।।

नीच व्यक्ति यदि किसी कारणवश अपने गुण और सामर्थ्य से अधिक कुछ पा लेता है तो वह घमंडी हो जाता है। वह अपने मूल सीधे और तिरछे खानों में भी कितनी भी दूर चल सकता है। प्यादा जब आखिरी खाने में पहुँच जाता है तो उस खाने के मूल रूप में रहने वाले मोहरे के बराबर हो जाता है और उसी की चाल चलने लगता है। यदि प्यादा वज़ीर के खाने तक आ जाता है तो उसी के समकक्ष हो जाता है।

जो रहीम ओछो बढ़ै, तो अति ही इतराय।
प्यादा सौं फरजी भयौ, टेढ़ो–टेढ़ो जाय।।

किसी साधारण व्यक्ति को ऊँचा पद मिलने पर उसमें घमंड आ जाता है।

रहीम के दोहों में अनेक नैतिक शिक्षाएँ हैं जो हमारे दैनिक जीवन में काम आती है। रहीम ने परोपकारी मनुष्य की प्रशंसा की है। परोपकारी मनुष्य दूसरों का भला करने के साथ–साथ अपने आप को भी धन्य करता है, जिस प्रकार मेंहदी बाँटने वाले के हाथ अनायास ही मेंहदी से रच जाते हैं। इस प्रकार परोपकार के द्वारा मनुष्य दूसरों का भला करने के साथ–साथ अपना भी भला करता है।

वे रहीम नर धन्य है, पर उपकारी अंग ।
बाँटनवारे को लगै, ज्यों मेंहदी को रंग ।।

रहीम के कथनानुसार कुसंग का प्रभाव अच्छे लोगों पर नहीं पड़ता। अगर हमारा स्वभाव अच्छा है तो उस पर बुरे लोगों की संगति का प्रभाव नहीं पड़ता, जिस प्रकार चंदन के वृक्ष पर साँप लिपटे रहते हैं परंतु चंदन अपनी सुगंध और शीतलता नहीं छोड़ता। उत्तम प्रकृति के लोग किसी भी परिस्थिति में अपने अच्छे स्वभाव को नहीं छोड़ते।

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।

कवि कहते हैं चिन्ता और तृष्णा सब परेशानियों की जड़ है। अगर मनुष्य चिंतामुक्त हो जाए तो वह सबसे बड़ा साहूकार कहलाएगा। निम्नलिखित दोहे में रहीम ने इसी बात को स्पष्ट किया है :

चाह गई चिंता मिटी, मनुआ बेपरवाह।
जिनको कछु न चाहिए, वे साहन के साह।।

रहीम की कविता में उनकी प्रतिभा, ज्ञान, विषय विशालता और विविधता के दर्शन होते हैं। नीति, श्रृंगार और भक्ति उनके काव्य के विषय थे। अपने दोहों में रहीम ने लौकिक, अलौकिक तथा जीवन के व्यावहारिक पक्षों को दर्शाया है। रहीम की भाषा ब्रज और अवधी है। इसके अतिरिक्त उन्हें कई भाषाओं का ज्ञान था। वे योग्यता के सच्चे पारखी थे। उन्होंने मानव व्यवहार और प्रकृति व्यवहार का गहन निरीक्षण किया था। सूक्ष्म अवलोकन, शास्त्रज्ञान और सहज अभिव्यक्ति उनकी निजी विशेषताएँ हैं। उनके व्यक्तित्व में उदारता, सहजता, सच्चरित्रता और विनम्रता के गुण थे। रहीम का समय भक्तिकाल और रीतिकाल के बीच की कड़ी है। रहीम के दोहों की सच्चाई पाठकों के हृदय पर गहरा प्रभाव छोड़ती है। उन्होंने जीवन के खट्टे–मीठे अनुभवों को अपनी रचनाओं में उतारा है इसलिए उनके दोहों में हमें जीवन के विविध चित्र मिलते हैं। हिन्दी के नीतिकारों में रहीम का स्थान सर्वोपरि है।

i) दोहों की विशेषता :– सरस, पाण्डित्य पूर्ण, शिक्षा प्रद, सर्व जनहिताय अर्थ गाम्भीर्य युक्त, अतुभवजन्य सच्चाई, नैतिकता आदि पर प्रकाश डालना।

ii) काव्य शैली – सरस एवं सुबोध

bodhiyla.com

Question 6

''कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों को निभाने वाला व्यक्ति श्रेष्ठ होता है तथा ऐसा ही व्यक्ति ईश्वर को प्रिय भी होता है।'' निराला जी द्वारा रचित 'प्रियतम' कविता के आधार पर सिद्ध किजिए । [12 1/2]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

'प्रियतम' कविता पर आधारित इस प्रश्न को छात्र–छात्राओं द्वारा सर्वाधिक लिखा गया। कविता भाग आसान होने के कारण उदाहरण के साथ लिखा गया।

किसी–किसी परीक्षार्थी ने आवश्यकता से अधिक विस्तृत उत्तर लिखा।

कहीं–कहीं मात्रागत अशुद्धियाँ मिली जिसे कक्षा में सुधारा जा सकता है।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- कक्षा में समयसीमा के अनुसार उत्तर लिखने का अभ्यास कराया जाए।
- अध्यापक कविता–भाग को कंठस्थ करा कर भी स्मरण करना सिखा सकते हैं।
- कविता का भावार्थ, उत्तर में लिखना सिखाया जाए। कविता की सीख अवश्य शामिल की जाए।
- छात्रों को बताऐं कि कवि का विस्तृत परिचय पूछने पर ही दिया जाए।

MARKING SCHEME

Question 6

बहुमुखी प्रतिभा के धनी कवि निराला जी छायावादी काव्यधारा के प्रमुख कवियों में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनकी बाद की रचनाओं में प्रगतिवाद के स्वर फूटते दिखाई देते हैं। महाकवि 'निराला' ने हिन्दी साहित्य को एक नवीन आभा प्रदान की। इन्होंने मुक्त छंद की शुरुआत की तथा इस प्रकार हिन्दी कविता को छन्द और तुक के बन्धन से मुक्त किया, छन्द से मुक्त होने पर भी इनकी कविता में संगीत के माधुर्य की अनुभूति होती है। 'प्रियतम' इनकी इसी प्रकार की रचना है।

निराला जी ने संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग किया है। भारतीय संस्कृति के प्रति कवि पूर्णतः समर्पित है। प्रस्तुत कविता 'प्रियतम' में कवि ने विष्णु भगवान और नारद जी से सम्बन्धित एक पौराणिक प्रसंग के माध्यम से यह सिध्द करने का प्रयास किया है कि जीवन में अपने कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों को निभाने वाला व्यक्ति ही श्रेष्ठ होता है और ऐसा ही व्यक्ति ईश्वर को प्रिय है।

एक बार नारद जी बैकुण्ठ धाम में विष्णु भगवान के पास पहुँचे और पूछने लगे – हे भगवन्! मृत्युलोक में आपका सबसे प्रिय भक्त कौन है? इसके उत्तर में भगवान विष्णु ने नारद जी से कहा कि मुझे अपने प्राणों से भी प्रिय एक किसान है। नारद जी कहते हैं –

''मृत्युलोक में कौन है पुण्यश्लोक

भक्त तुम्हारा प्रधान?''

विष्णु भगवान ने कहा ––''एक सज्जन किसान है प्राणों से प्रियतम।''

नारद जी विष्णु भगवान के इस उत्तर से चकित रह गए और सोचने लगे कि भगवान ने किस आधार पर एक साधारण किसान को अपना सर्वप्रिय भक्त मान लिया जबकि वह स्वयं रात–दिन भगवान के नाम का जाप करते रहते हैं ''नारायण नारायण''। अतः यह बात उनके गले नहीं उतरी। वे बोले ''उसकी परीक्षा लूँगा।''

bodhiyla.com

विष्णु भगवान यह सुनकर हँसने लगे। वे समझ गए कि नारद जी को यह बात अच्छी नही। लगी अतः उन्होंने नारद जी से कहा।

''ले सकते हो।''

नारद जी बैकुण्ठ धाम से मृत्युलोक में चले आए और किसान की परीक्षा लेने उसके पास पहुँचे। वहाँ पहुँच कर उन्होंने देखा कि वह किसान दोपहर को हल जोतकर जब अपने घर पहुँचा तो उसने दरवाजे पर पहुँचकर 'राम जी ' का नाम लिया। फिर वह स्नान करके तथा भोजन करके अपने खेतों मे काम पर चला गया। शाम को लौटकर उसने दरवाजे के पास ही खड़े होकर राम का नाम लिया तथा प्रातःकाल खेत में काम पर जाते हुए उस किसान ने एक बार फिर भगवान राम का नाम लिया। यह देखकर नारद जी चकरा गए और सोचने लगे – इस किसान ने दिन–भर में केवल तीन बार ही भगवान का नाम लिया फिर भी भगवान को यही भक्त याद रहा! कवि के शब्दों में –

प्रातः काल चलते समय

एक बार फिर उसने
मधुर नाम स्मरण किया।
''बस केवल तीन बार?''
नारद चकरा गए –

किन्तु भगवान को यह किसान ही याद आया?

नारद जी अपनी इसी उलझन को लेकर विष्णु लोक चले गए और भगवान से बोले –

''देखा किसान को
दिन भर में तीन बार
नाम उसने लिया है।''
फिर भी आपको वही किसान प्रिय है?

विष्णु भगवान ने तत्काल इस प्रश्न का उत्तर देना उचित न समझा। इसके लिए उन्होंने नारद जी की परीक्षा लेनी चाही जिससे उनके प्रश्न का उत्तर प्राप्त हो जाए। विष्णु भगवान ने नारद जी को एक कार्य सोंपा और कहा –

''नारद जी, आवश्यक दूसरा
एक काम आया है,
तुम्हें छोड़कर कोई
और नही कर सकता।''

विष्णु भगवान ने नारद जी को तेल से भरा हुआ एक पात्र दिया और कहा कि इसे हाथ में लेकर भूमंडल की प्रदक्षिणा कर आइए। एक बात का विशेष ध्यान रखना है कि तेल का पात्र ले जाते समय उसमें से एक भी बूँद जमीन पर न गिरे। विष्णु जी बोले –

''तैल–पूर्ण पात्र यह
लेकर प्रदक्षिणा कर आइए भूमंडल की।
ध्यान रहे सविशेष
एक बूँद भी इससे
तैल न गिरने पाए।''

नारद जी तेल–पात्र हाथ में लेकर भूमण्डल की प्रदक्षिणा करके जब बैकुण्ठ को लौटे तो उनका मन बहुत प्रफुल्लित था कि उन्होंने विष्णु भगवान की आज्ञा का पूर्णतः पालन किया और तेल की एक बूँद भी धरती

bodhiyla.com

पर गिरने न पाई। साथ ही नारद जी यह सोच–सोच कर और भी प्रसन्न हो रहे थे कि तेल के बारे में आज एक नया रहस्य पता चलेगा। नारद जी को उल्लसित देखकर विष्णु भगवान ने स्नेह से बैठाकर कहा–

''यह उत्तर तुम्हारा यहीं आ गया,
बतलाओ, पात्र लेकर जाते समय कितनी बार
नाम इष्ट का लिया ?''

विष्णु भगवान के इस प्रश्न को सुनकर नारद जी शंकित हो गए और भगवान से बोले – हे भगवन्! आपने ही यह कार्य मुझे सौंपा था अतः मैं पूर्ण मनोयोग से उसे ही पूर्ण करने में लगा था फिर आपका नाम कब लेता? विष्णु भगवान ने नारद जी को समझाते हुए कहा कि भहे नारद! उस किसान का भी वह कार्य मेरा ही दिया हुआ है। वह अपने कार्य को पूरे मन के साथ पूर्ण निष्ठा से करता है। इसके अतिरिक्त अपने परिवार के प्रति अन्य उत्तरदायित्व भी निभाता है और अपनी जिम्मेदारियाँ पूर्ण करते हुए वह किसान मेरा नाम भी लेता है। यही कारण है कि वह किसान मेरा सबसे प्रिय भक्त है –

''नारद उस किसान का भी काम
मेरा दिया हुआ है।
उत्तरदायित्व कई लादे हैं एक साथ
सबको निभाता और
काम करता हुआ
नाम भी वह लेता है
इसी से है प्रियतम।''

नारद जी यह उत्तर पाकर लज्जित हो गए। उनकी समझ में आ गया कि सच्ची पूजा अपना कर्त्तव्य करने में है। जो व्यक्ति लगन व निष्ठा से अपने कर्त्तव्य पूर्ण करता है और अपने उत्तरदायित्व भी निभाता है, ईश्वर उससे प्रसन्न रहते हैं। अकर्मण्य रहकर केवल ईश्वर भजन में लीन रहने में कोई समझदारी नहीं है और न ईश्वर ही उस भक्त को अपना प्रिय पात्र समझते हैं। नारद जी इस सत्य को समझ गए और बोले – ''यह सत्य है।''

निर्मला

Question 7

निर्मला उपन्यास का उध्देश्य समाज में फैली बहुत सी समस्याओं को उजागर करना है । स्पष्ट कीजिए। [12½]

bodhiyla.com

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

'निर्मला' उपन्यास पर आधारित इस प्रश्न को अधिकतर परीक्षार्थियों द्वारा लिखा गया।

कुछ परीक्षार्थियों ने न केवल मुख्य समस्याओं का वर्णन किया बल्कि सभी समस्याओं को विस्तार से बताया।

कुछ छात्रों ने विस्तृत रूप से लेखक प्रेमचंद का परिचय लिखा जो आवश्यक नहीं था।

कथा को प्रश्न के साथ समाहित करके लिखने का अभ्यास कराया जाए जिसका कुछ परीक्षार्थियों में अभाव दिखाई दिया।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- निर्मला उपन्यास में वर्णित समस्याओं को व्यवहारिक जीवन से जोड़ कर समझाऐं। उपन्यास में वर्णित प्रत्येक समस्या को विस्तृत रूप से तत्कालीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में समझाया जाए।
- परीक्षार्थियों में मौलिक विचारों की उत्पत्ति व दिए गए विषय पर सोच को विकसित करने का प्रयास किया जाए।
- छात्रों को बताऐं कि कवि या लेखक परिचय बहुत संक्षिप्त रूप से लिखा जाए।

MARKING SCHEME

Question 7

मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित 'निर्मला' उपन्यास एक ऐसी रचना है, जो केवल मनोरंजन के लिए नहीं लिखी गई, अपितु समाज में फैली कुछ कुरीतियों और बुराइयों पर चोट करने तथा इन बुराइयों को दूर करने की प्रेरणा देने के उद्देश्य से रचित है।

आज के समाज में 'दहेज प्रथा' एक ऐसी भीषण समस्या है, जिसके कारण निराश माता–पिता दहेज के अभाव मे अपनी सुशील एवं योग्य कन्या का विवाह अयोग्य दुहाजू व्यक्तियों से करने को बाध्य होते हैं। निर्मला कहानी में प्रेमचंद जी ने इसी समस्या पर प्रहार किया है। निर्मला जैसी सुंदर, सुशील एवं विदुषी कन्या का विवाह उसकी माँ को मुंशी तोताराम जैसे व्यक्ति से इसीलिए करना पड़ा, क्योंकि उसके पिता की असामयिक मृत्यु के कारण दहेज को लेकर सिन्हा परिवार ने उसे अपनी पुत्रवधू बनाने से साफ इंकार कर दिया था।

निर्मला को अपने पिता की समान आयु वाले कुरूप व्यक्ति को अपना पति स्वीकार करना पड़ा, इससे बड़ा अभिशाप और क्या हो सकता है। दोनों की आयु में अंतर के कारण निर्मला को मानसिक कष्ट मिले, वहीं उसका बूढ़ा पति हमेशा उसे संदेह की नज़रों से देखता रहा। इससे बड़ी नीचता क्या हो सकती है कि अपने ही पुत्र और पत्नी के स्नेह पूर्ण व्यवहार को उसने संदेह की दृष्टि से देखा। जिसके कारण न केवल उसे अपने जवान पुत्र से हाथ धोना पड़ा, बल्कि परिवार की शांति भंग करने तथा अंततः उसके सर्वनाश का कारण बना।

अनमेल विवाह के कारण कन्या का यौवन, रूप और उम्र सब नष्ट हो जाते हैं। निर्मल के माध्यम से प्रेमचंद जी ने नारी की अंतर्वेदना, पीड़ा तथा मानसिक व्यथा को उजागर करने का प्रयास किया है। साथ ही डॉ० भुवन मोहन सिन्हा तथा उसके माता–पिता को आड़े हाथों लिया है, जो कन्या की श्रेष्ठता उसके शील, सदाचार, चरित्र एवं सौंदर्य से नहीं आँकते, बल्कि दहेज में मिलने वाली रकम से आँकते हैं।

'निर्मला' उपन्यास में दहेज प्रथा तथा अनमेल विवाह के अलावा कई अन्य समस्याओं की ओर भी पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया गया है। इस उपन्यास में विमाता की समस्या की ओर भी प्रकाश डाला गया है। यह आम धारणा है कि विमाता अपने सौतेले बच्चों से प्यार करना तो दूर, उन्हें फूटी आँख भी नहीं देख सकती, जब कि उपन्यास में इस प्रचलित धारणा का खंडन किया गया है। निर्मला मुंशी तोताराम के तीनों बच्चों से निश्छल स्नेह करती है, परंतु यह उसका दुर्भाग्य कि उसे सौतेली माता समझ कर उस पर तरह–तरह के लांछन एवं दोषारोपण किए जाते हैं।

बेचारी निर्मला तो बात–बात में यह सावधानी बरतती है कि किसी प्रकार अपने पति, अपनी ननद और सौतेले बच्चों का विश्वास जीत सके। इसीलिए वह अनेक बार अपमान के कड़वे घूँट पीकर भी चुप रह जाती है। जिया को गहने चुराते देख लेने पर भी उसने अपने पति से उसका नाम नहीं लिया। यही नहीं उसे पुलिस से बचाने के लिए एक हजार रुपये भी देती है। प्रेमचंद समाज की इस धारणा को निर्मूल सिद्ध करना चाहते थे, कि हर सौतेली माँ अपने सौतेले बच्चों की दुश्मन होती है। 'निर्मला' उपन्यास में कुछ अन्य समस्याओं की ओर भी संकेत किया गया है, जिनमें स्त्रियों की रिश्वत खोरी तथा प्रदर्शन प्रियता, ननद–भावज के झगड़े आदि मुख्य है। इनमें ननद–भावज के झगड़े आम परिवार में देखे जा सकते हैं। जैसे, ननद–भावज की नोंक–झोंक, एक–दूसरे पर शक–संदेह, चुगली–शिकायत, टीका–टिप्पणी, लड़ाई–झगडा होना आम बात है।

मुंशी तोताराम की बहन रुक्मिणी को अपने भाई की दूसरी पत्नी निर्मला फूटी आँख भी नही सुहाती। वह उसे नीचा दिखाने तथा तंग करने का कोई भी मौका नही गँवाती। वह कभी अपने भाई मुंशी तोताराम को आड़े हाथों लेती है, तो कभी उसके तीनो बच्चों को निर्मला के विरुद्ध करने में कोई कसर नही छोड़ती।

प्रेमचंद ने रुक्मिणी के माध्यम से विधवा की समस्या को भी उजागर किया हैं। मुंशी तोताराम की विधवा बहन उसके पास केवल इसीलिए रहने को विवश है, क्योंकि उसके परिवार में उसके लिए कोई जगह नहीं हैं। वह अपमान सहकर भी अपने भाई के यहाँ पड़ी रहती है। तोताराम स्वयं निर्मला से कहता है – ''मैंने सोचा

bodhiyla.com

था, विधवा है, अनाथ है, पाव भर आटा खाएगी, पड़ी रहेगी। जब नौकर–चाकर खा रहे हैं, तो वह अपनी बहन ही है, लड़कों की देखभल के लिए जरूरत थी, रख लिया।"

'सुधा' चरित्र के माध्यम से प्रेमचंद का उद्देश्य आज की शिक्षित नारी तथा उसके स्वाभिमान को उजागर करना है। सुधा को जब यह पता चलता है कि उसके पति ने निर्मला के विवाह सबंध को केवल इसीलिए ठुकरा दिया कि उसके पिता की मृत्यु के बाद वहाँ से दहेज मिलने की कोई उम्मीद न रही थी, तो उसने अपने पति को आड़े हाथों लिया और प्रायश्चित स्वरूप निर्मला की छोटी बहन का विवाह अपने पति के छोटे भाई से बिना दहेज लिए करवा दिया।

निर्मला से दुर्व्यवहार करने पर भी उसने अपने पति को नहीं छोड़ा। उसे ऐसा लताड़ा कि वह आत्महत्या करने पर विवश हो गया। वर्तमान युग की स्वाभिमानी नारी के अनुरूप उसका कथन – "ईश्वर को जो मंजूर था, वह हुआ, ऐसे सौभाग्य से मैं वैधव्य को बुरा नही समझती।" लेखक के इस उद्देश्य की ओर संकेत करता है कि नारी के स्वाभिमान की रक्षा करनी चाहिए तथा निर्भीक होकर अपनी बात कहनी चाहिए।

सुधा नही जानती थी कि उसकी भर्त्सना सुनकर उसके पति आत्महत्या कर लेंगे। पर वह नारी के अपमान को सह भी नही सकती थी। सुधा और डॉ० भुवनमोहन के माध्यम से प्रेमचंद जी समाज में व्याप्त चरित्रहीनता पर प्रहार करते हैं।

भालचन्द्र सिन्हा के माध्यम से समाज में व्याप्त मद्यमान, रिश्वतखोरी तथा भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया गया है। भालचंद्र सिन्हा अत्यंत क्रूर, वाचाल और धन के लोभी थे। वे समाज के ऐसे वर्ग के प्रतिनिधि है, जो रिश्वत तथा धोखा–घड़ी से धन कमाकर मानवीय भावनाओं को तिलांजलि दे देते हैं। उनका बेटा डॉ० भुवनमोहन भी पिता के पदचिह्नों पर चलने वाला ऐसा युवक दिखाया बया है, जिसे विवाह में कन्या चाहे जैसी मिले, पर अधिक से अधिक दहेज अवश्य मिलना चाहिए।

इस प्रकार निर्मला उपन्यास का उद्देश्य समाज में फैली बहुत सी समस्याओं को उजागर करना है जैसे –

दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा रिश्वतखोरी,

चरित्रहीनता, विधवा की समस्या, मध्यवर्गीय परिवारों की आंतरिक कलह,

विमाता की समस्या, तथा नारी जाति की विवशता आदि ।

र्निमला उपन्यास में वर्णित समस्याएँ :–

a) i) दहेज प्रथा ii) अनमेल विवाह iii) प्रदर्शन की भावना

iv) पुत्र–पुत्री में भेद v) विधवा जीवन

b) घूसखोरी, युवाओं में कुष्ठा, विमाता की स्थिति

Question 8

सियाराम साधु की बातों से क्यों और कैसे प्रभावित हो गया? दोनों की भेंट का वर्णन कीजिए। [$12^{1/2}$]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

'निर्मला' उपन्यास का यह प्रश्न सियाराम व साधु से जुड़ा था। इसे बहुत अधिक छात्रों ने लिखा।

दोनों की भेंट का वर्णन बहुत रूचि के साथ किया गया। यत्र तत्र मात्राओं की अशुद्धियाँ मिली। उपन्यास के अंश से उत्तर को भी प्रमाणिक करते हुए लिखने का प्रयास किया गया।

कुछ छात्रों ने उत्तर में लेखक का विस्तृत परिचय दिया जो आवश्यक नहीं था।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- छात्रों को बताऐ कि अगर पूछा ना गया हो तो लेखक का विस्तृत परिचय देना उत्तर में आवश्यक नहीं है। जो पूछा है उस पर ही विस्तृत चर्चा हो।
- उपन्याय के अंश को सरलार्थ करके समझाया जाए। घटनाक्रम समझाते समय उपन्यास के अंश देकर लिखने का अभ्यास कराए।
- उपन्यास पढ़ाते समय प्रत्येक पहलू पर विचार विमर्श आवश्य किया जाए।

MARKING SCHEME

Question 8

गहने चोरी हो जाने तथा जियाराम की मृत्यु की घटना के बाद से निर्मला के व्यवहार में अचानक परिवर्तन आ गया । भविष्य की चिन्ता के कारण वह चिड़चिड़ी हो गई। वह इकलौते बच्चे सियाराम पर भी ध्यान न देती, उसके पास स्कूल जाने के लिए जूते भी न होते। रुक्मिणी और उसकी आपस में रोज ही झड़प हो जाती । वह एक–एक कौड़ी को दाँत से पकड़ने लगी अतः घर की जरूरतों को टाल जाती। यहाँ तक कि स्वयं की धोती भी जब तक तार–तार न हो जाती नई न खरीदती।

एक दिन उसने सियाराम को घी लाने के लिए बाजार भेजा क्योंकि उसे भूँगी पर विश्वास न था। सियाराम किसी चीज़ में हेराफेरी नहीं करता था। वह एक–एक चीज़ को तौलती, कम होने पर वापस करवा देती। आज जब वह घी लाया तो उसने सूँघकर कह दिया –''घी खराब है लौटा आओ।'' सियाराम ने कहा कि यह घी सबसे अच्छा है, दुकानदार ने कहा था कि माल वापस न होगा, ठीक से देखकर ले जाओ। निर्मला ने कहा – ''घी में साफ चर्बी मिली हुई है।'' और वह घी की हाँडी छोड़कर चली गई। सियाराम क्रोध व क्षोभ से भर गया, किस मुँह से लौटाने जाए।

सियाराम बहुत दुःखी हो गया। उसे अपनी माँ की याद आ गई। वह सोचने लगा – मंसा भइया, जिया भइया तो चले गए मैं ही दुःख भोगने को क्यों बच गया? रोते–रोते वह माँ को याद कर बोला – ''अम्माँ! तुम मुझे क्यों भूल गई? मुझे क्यों नहीं बुला लेती?''

सियाराम को वहीं बैठा देख निर्मला क्रोधित होकर बोली – तुम अभी तक यहीं बैठे हो? खाना कब बनेगा? सियाराम ने स्कूल का वास्ता दिया कि वह रोज ही समय पर स्कूल नहीं पहुँच पाता, पर निर्मला ने उसे दो चार बातें और सुना दी, कहने लगी – ''विमाता का नाम ही बुरा होता है। अपनी माँ विष भी खिलाए तो अमृत है मैं अमृत भी पिलाऊँ तो विष हो जाएगा।''

इतना कहकर वह रोने लगी। बालक सियाराम सहम गया कि न जाने अब कौन सा दंड मिले? अतः वह घी वापस करने चल दिया पर बनिए ने घी लौटाने से मना कर दिया।

बनिए की दुकान पर ही एक साधु यह तमाशा देख रहा था और सियाराम से बोला – घी तो बहुत अच्छा है। सियाराम रो पड़ा कि अब कैसे कहे कि घी अच्छा नहीं है। बोला – ''वही तो कहती है, घी अच्छा नही है, लौटा आओ।'' बनिए ने ''सौतेली माँ है न!'' कहकर बालक को और भड़का दिया । फिर साधु भी दया दिखाते हुए बोला – भगवान् तुम कितना बड़ा अनर्थ करते हो! इस बालक को मातृप्रेम से वंचित कर दिया। राक्षसी

विमाता के गले डाल दिया। और उसने साह जी से घी लौटाने का अनुरोध किया। साधु की दयालुता का बालक पर गहरा प्रभाव पड़ गया।

सियाराम घी लेकर लौटा तो रास्ते में साधु उससे मीठी–मीठी बातें करने लगा।

वह उसकी दुखती रग पर हाथ रखते हुए बोला – मेरी माँ भी मुझे तीन साल का छोड़कर परलोक सिधार गई थी, तभी तो मातृविहीन बालकों को देखकर मेरा ∽दय फट पड़ता है । मेरे पिता ने भी दूसरा विवाह कर लिया था, विमाता बड़ी कठोर थी, खाना न देती, मारती, एक दिन मैं घर से निकल गया। उसी दिन से मेरे सारे कष्टों का अन्त हो गया।

साधु की बात सुनकर सियाराम के स्वयं के भागने के विचार को बल मिला। साधु ने उसे बताया कि स्वामी परमानन्द के पास आकर उसने योगविद्या सीखी जिससे वह अपनी माँ के दर्शन कर लेता है।

बालक आश्चर्य से बोला – मृत माँ को कैसे देख पाते हैं? तब साधु ने उसे बताया कि योग्य गुरु के पास अभ्यास करने से सब सम्भव है। सियाराम ने उसकी बातों से प्रभावित होकर उस साधु का स्थान जानना चाहा। वह उसी समय उसके साथ जाना चाहता था पर साधु ने फिर दोबारा आने के लिए कहा। सियाराम प्रसन्न हो गया और उससे अपने घर आने को कहा। आज वह बहुत प्रसन्न था। उसने साधु से पूछा – ''कल किस वक्त आइएगा?'' साधु ने कहा – ''निश्चय से नही कह सकता। किसी समय आ जाऊँगा।''

इस प्रकार साधु की बातों से अत्यधिक प्रभावित हुआ बालक उसके जाल में फंस गया । वह बालक प्यार को पाने के लिए घर पर तरस रहा था, साधु के दो मीठे बनावटी बोलों ने उसके व्यथित हृदय पर मरहम का काम किया और अन्त में उससे पुनः मिलने का वायदा कर वह घर चला गया।

विमाता के व्यवहार से दुखी, पुनः–पुनः बाजार दौडना (सौदा लेने जाना और वापस करने जाना आदि), बनिये की दूकान पर साघू (कपटी वेश धारी) से भेंट, घी लौटाने की सिफारिस, बनिये और साघू द्वारा विमाता की आलोचना, साधू के कपट पूर्ण मधुर व्यवहार आदि पर प्रकाश डालना।

Question 9

निर्मला उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालते हुए अपने उत्तर की सतर्क पुष्टि कीजिए । [12 1/2]

<u>परीक्षकों की टिप्पणियाँ</u>

अधिकतर परीक्षार्थियों द्वारा शीर्षक की सार्थकता को सिद्ध करने हेतु बहुत कम लिखा गया। कथा, क्या है, ये अधिक समझाया गया।

अधिकांश छात्रों ने निर्मला की कथा बताते हुए 'निर्मला' की घटनाओं को वर्णित किया व 'निर्मला' उपन्यास का शीर्षक निर्मला से जोड़ दिया।

वास्तव में शीर्षक की सार्थकता पूर्ण है या नहीं से स्पष्ट निर्णय परीक्षार्थियों ने नहीं दिया।

<u>अध्यापकों के लिए सुझाव</u>

– निर्मला की प्रत्येक घटना को कक्षा में विस्तार से समझाया जाए।
– उपन्यास पढ़ाते समय प्रत्येक पहलू पर विचार–विमर्श करें।

bodhiyla.com

MARKING SCHEME

Question 9

प्रेमचंद जी का निर्मला उपन्यास नायिका प्रधान उपन्यास है। उपन्यास में निर्मला की करुणा भरी कहानी का चित्रण हुआ है। उपन्यास की प्रत्येक घटना उपन्यास की नायिका निर्मला से अवश्य जुडी है तथा उपन्यास का कथानक निर्मला के इर्द–गिर्द घूमता है।

किसी भी कहानी अथवा उपन्यास के शीर्षक का संबंध उसके कथानक की महत्वपूर्ण घटनाओं से अवश्य होता है। शीर्षक की यह विशेषता होती है कि उसे पढ़ते ही पाठक के मन में कथानक तथा महत्वपूर्ण घटनाओं एवं पात्रों के संदर्भ में यह जिज्ञासा जाग्रत होती है कि 'शीर्षक' का उनसे क्या संबंध है। किसी भी उपन्यास का शीर्षक इतना प्रभावशाली होना चाहिए कि वह अपने अंतर में उपन्यास का संक्षिप्त कलेवर समेटे हुए हो। 'निर्मला' शीर्षक को पढ़ते ही पाठक के मन में 'निर्मला' नामक पात्र के संबंध में जिज्ञासा उत्पन्न होना स्वाभाविक है। उपन्यास का आद्योंपांत पठन करने के बाद पाठक को भली–भॉंति यह समझ में आ जाता है कि इस उपन्यास का इससे अच्छा शीर्षक हो नहीं सकता था, क्योंकि उपन्यास का सारा ताना–बाना निर्मला को ध्यान में रखकर ही बुना गया है।

उपन्यास पढ़ते समय पाठक निर्मला के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त करता है । उसके कारुणिक जीवन से वह द्रवित हो उठता है, उसके दर्द से उसका मन छटपटाने लगता है, उसकी व्यथा पाठकों के मन को भी व्यथित करती है । उसके त्याग, बलिदान एवं समर्पण पाठकों को प्रभावित किए बिना नहीं रह पाता, दहेज एवं अनमेल विवाह के कारण हुई उसकी दयनीय दशा से पाठक विह्वल हो उठता है। निर्दोष, निष्कलंक तथा सच्चरित्र निर्मला पर उसके पति द्वारा लगाए गए आरोप से पाठकों का हृदय क्षोभ से भर जाता है।

प्रेमचंद जी ने इस उपन्यास में निर्मला के माध्यम से नारी जीवन का जितना मार्मिक तथा मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है, वैसा शायद ही अन्यत्र मिलेगा।

उपर्युक्त बातों से यह भली–भाँति स्पष्ट हो जाता है कि उपन्यास का शीर्षक 'निर्मला' सर्वथा उपयुक्त, प्रभावशाली तथा सार्थक है। उपन्यास का कथानक प्रारंभ से ही निर्मला के जीवन की घटनाओं से संबंधित है। कथानक का प्रारंभ 'निर्मला' के बचपन की ही एक घटना से होता है। उसके पिता की मृत्यु के कारण उसके लालची तथा दहेज लोभी ससुर द्वारा विवाह संबंध तोड़ना, दहेज के अभाव में उसकी माता द्वारा उसका विवाह उसके पिता की आयु के दुहाजू मुंशी तोताराम से किया जाना, ससुराल आते ही उसका मुंशी तोताराम की पूर्व पत्नी के तीन पुत्रों की माता बनना, अपने पति तोताराम तथा अपनी आयु की गहरी खाई के उपरांत उसका अपने भाग्य से समझौता करना, विधवा ननद के तानों तथा पति द्वारा उसके और मंसाराम के पवित्र संबंधों पर संदेह किया जाना, मंसाराम तथा जियाराम की मृत्यु तथा सियाराम के घर छोड़कर चले जाने के बाद निर्मला की मानसिक स्थिति, पीड़ा एवं अंतर्द्वंद्व एवं अंत में पति के गृह–त्याग के कारण देहांत–ये सब घटनाएँ निर्मला से ही जुड़ी हैं।

अतः स्पष्ट है कि आद्योपांत उपन्यास की घटनाएँ न केवल निर्मला से जुड़ी हैं, अपितु इन घटनाओं की प्रेरक भी निर्मला ही है । इन्हीं कारणों से प्रेमचंद जी ने अपने इस उपन्यास का नामकरण निर्मला के नाम पर किया है।

शीर्षक छोटा, कौतूहल वर्धक, समस्त घटनाओं का केन्द्रबिन्दु संक्षेप/सूत्र में सम्पूर्ण कथा समेटे हुए आदि बिन्दुओं पर सतर्क प्रकाश डालना आदि।

boduniya.com

Question 10

'सम्मान रक्षा के लिए आतिथ्य भोज के स्थान पर अपने बड़ों का सम्मान करना अधिक बेहतर है ।" कथन को सिध्द करते हुए 'बूढ़ी काकी' कहानी का उध्देश्य लिखिए । [12$^{1/2}$]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

'कथा सुरभि' से 'बूढ़ी काकी' पर आधारित इस प्रश्न को अधिकतर छात्र–छात्राओं ने लिखा।

कुछ छात्र–छात्राओं ने 'बूढ़ी काकी' का संक्षिप्त सार लिखा व कहानी का उद्वेश्य में प्रश्न की भाषा ही लिखी क्योंकि यहीं उद्वेश्य भी है।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- अध्यापक कक्षा में कथा के सारलेखन के साथ–साथ मूल उद्वेश्य व कथा की सीख स्पष्टतः समझाएं।
- कहानी में आए कठिन शब्दार्थ भी समझाए जाऐं।
- हर प्रश्न के उत्तर में केवल कथा–सार न लिखकर प्रत्येक पहलू पर चर्चा करना सिखाया जाए।

bodhiyla.com

MARKING SCHEME

Question 10

हिन्दी साहित्य सम्राट मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित बूढ़ी काकी कहानी एक भावना प्रधान सामाजिक समस्या पर आधारित कहानी है । प्रेमचन्द ने इसमें एक सर्वकालीन समस्या को उठाया है । आज का मानव आत्मकेन्द्रित होता जा रहा है जिसमें संयुक्त परिवार के लिए कोई स्थान नहीं है । आधुनिक व प्रगतिशील कहे जाने वाले इस युग में मनुष्य हृदयहीन व स्वार्थी हो गया है । उसका हृदय एक बुजुर्ग की आत्म–व्यथा सुनने को तैयार नहीं है । कहानीकार ने बूढ़ी काकी के माध्यम से समाज द्वारा उपेक्षित एक वृद्ध स्त्री के हृदयस्थ भावों का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है ।

काकी को पति व दोनों पुत्रों की मृत्यु हो जाने से भतीजे बुद्धिराम का ही आसरा खोजना पड़ा । उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति बुद्धिराम के नाम कर दी । बुद्धिराम ने उस समय तो काकी को रंगीन ख्वाब दिखाए, पर बाद में रोटी–रोटी को भी मोहताज कर दिया। काकी भूख से व्याकुल होकर रोने लगती, पर उनके संताप और आर्त्तनाद पर कोई ध्यान नहीं देता था।

बुद्धिराम के घर पर बेटे के तिलक का उत्सव मनाया जा रहा था। विविध व्यंजन बनाए जा रहे थे। मेहमानों के स्वागत की तैयारियाँ चल रही थीं। पर बूढ़ी काकी इस चहल–पहल से दूर अपनी कोठरी में शोकमग्न बैठी हुई थी। उन्हें लगा कि सब लोग भोजन कर चुके हैं। उनका मन रोने को हुआ पर अपशकुन के डर से रो भी न पाई।

रूपा मेहमानों के स्वागत सत्कार में लगी हुई थी – काकी की किसी को सुध नहीं थी। वह उदास होकर कहती है – आहा! कैसी सुगंधि है? अब मुझे कौन पूछता है? जब रोटियों ही के लाले पड़े है तब ऐसे भाग्य कहाँ कि भरपेट पूड़ियाँ मिलें? काकी से रहा नहीं गया। वह रेंगती हुई कड़ाह के पास पहुँच गई। रूपा ने काकी को देखा तो वह काकी पर झपट पड़ी और उन्हें खरी–खोटी सुनाने लगी क्योंकि उसे अपनी झूठी प्रतिष्ठा पर आँच आती दिखाई दे रही थी। वह काकी से बोली –

"तुम कोई देवी नहीं हो कि चाहे किसी के मुँह में पानी न जाए, परन्तु तुम्हारी पूजा पहले ही हो जाए।"

सब के सब मेहमान भोजन कर रहे थे, तब भी घर के किसी सदस्य को काकी का ध्यान नहीं आया। काकी उकड़ूँ बैठकर हाथों के बल सरकती आँगन में आई पर मेहमानों ने काकी को देखकर दुत्कार दिया –''अरे यह बुढ़िया कौन है? यह कहाँ से आ गई? देखो किसी को छू न ले।''

सभ्य कहलाने वाले हमारे समाज की एक बुजुर्ग के लिए मन में ऐसी निकृष्ट भावना!

यह हमें सोचने को विवश कर देती है इतना ही नहीं काकी का भतीजा, जो आज काकी की सम्पत्ति के बल पर इतना उछल रहा है, वह भी काकी का सम्मान न कर सका बल्कि उसने भरी सभा में काकी को घसीटते हुए जाकर अँधेरी कोठरी में पटक दिया। काकी बेहोशी की हालत में पड़ी रही। रात को जब उन्हें होश आया तो कोई आहट न पाकर सोचने लगी –

''सब लोग खा–पीकर सो गए और उनके साथ मेरी तकदीर भी सो गई। कैसे कटेगी? राम! क्या खाऊँ?''

काकी के ये वाक्य भीतर तक हृदय को चीर कर रख देते हैं। उन्हें मेहमानों के बीच अपने ही सगे बेटे तथा बहू द्वारा की गई दुर्गति व अपमान की बात याद आई, वे सोचने लगी – यदि आँगन में चली गई तो क्या बुढ़िया से इतना कहते न बनता था कि काकी अभी लोग खा रहे हैं, फिर भी मुझे घसीटा, पटका! उन्हीं पूड़ियों के लिए रूपा ने सबके सामने गालियाँ दी।

इस प्रकार लेखक ने पाठकों के सामने इस प्रश्न को रखा है कि क्या बुजुर्गों के साथ ऐसा वर्ताव उचित है? साथ ही उन्होंने रूपा का हृदय परिवर्तन कर एक आशा की किरण भी छोड़ी है कि मानव भीतर से इतना कठोर नहीं है, कहीं उसकी सुप्त कोमल भावनाएँ भी है। लेखक उन्हें जगाना चाहते हैं। जब काकी से भूख असहन हो उठी तो वह लाडली के सहारे जूठे पत्तलों तक पहुँच गई और जूठी पत्तलों में पड़ी पूड़ियों के टुकड खाने लगी। ठीक उसी समय रूपा की आँख खुली तथा वह इस दृश्य को देखकर सन्न रह गई और स्वयं को दोषी मानकर भला–बुरा कहने लगी। अन्त में काकी से क्षमा याचना करते हुए उनको भोजन का थाल देते हुए कहती है – ''काकी उठो, भोजन कर लो, मुझसे आज बड़ी भूल हुई, उसका बुरा न मानना। परमात्मा से प्रार्थना कर लेना कि वह मेरा अपराध क्षमा कर दें।''

इस प्रकार कहानीकार इस कहानी द्वारा प्रेरणा देते हैं कि हमें झूठी सामाजिक मान–प्रतिष्ठा के स्थान पर पहले अपने बड़ों का सम्मान करना चाहिए। लोग बात समाज में अपने नाम व यश के लिए पूरे के पूरे गाँव व शहर के लोगों को भोजन कराते हैं लेकिन अपने घर के बड़े प्राणी को तुच्छ समझ कर एक कोने में पटक देते हैं जो उनके प्रति अन्याय है। लेखक समाज में जागृति पैदा करना चाहते हैं क्योंकि कई परिवारों में, जहाँ बुजुर्ग होते हैं, बच्चे उनके प्रति उपेक्षा का भाव रखते हैं जो उचित नहीं हैं।

आज व्यक्ति झूठी मान–प्रतिष्ठा के लिए अपने संस्कार व संस्कृति खोता जा रहा है। नई पीढ़ी पुरानी पीढी को उपेक्षित मानकर उसका अपमान करती रहती है। लेखक ने लाडली व काकी के माध्यम से बालमन व प्रौढ़मन के अन्तर को दिखाया है। लेखक आशावादी और आदर्शवादी हैं। रूपा के हृदय परिवर्तन द्वारा वह समाज में जागरूकता पैदा करना चाहते हैं और वह अपने उद्धेश्य में सफल रहे हैं।

i) कथन की सार्थकता पर प्रकाश

ii) उद्धेश्य

Question 11

'चिकित्सा शास्त्र के इतिहास में ऐसा रोग अब तक देखा–सुना नहीं गया । ऐसे राजरोग को कोई साधारण आदमी झेल भी कैसे सकता था ।'' कहानी में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए । [$12^{1/2}$]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

इस प्रश्न में अधिकांश परीक्षार्थियों ने केवल कथा का सार लिखा।

मात्रागत अशुद्धियाँ अधिक पाई गई। कहीं–कहीं अंग्रेजी में भी शब्द लिखे गए।

कहानी के अंश लिखकर व्यंग्य–भाव समझाना था। छात्र–छात्राओं ने सम्वाद लिखकर खनापूर्ति की।

अध्यापकों के लिए सुझाव

– लेखक ने क्या कहने का, समझाने का प्रयास किया है, अध्यापक स्पष्ट रूप से कक्षा में समझाए।
– स्थान व व्यक्ति के नाम सही लिखने का अभ्यास कराया जाए।

MARKING SCHEME

Question 11

'महाराजा का इलाज' कहानी के लेखक श्री यशपाल मार्क्सवादी विचारों के कहानीकार हैं। इनकी कहानी वर्ग संघर्ष तथा समाज की विविध स्थितियों को सामने रख देती है। इनकी सभी कहानियों व उपन्यासों में जीवन का यथार्थ एवम् वास्तविक चित्रण मिलता है। यथार्थवादी होने के कारण ही इन्होंने समाज में फैली हुई कुरीतियों व रूढ़ियों का खुलकर विरोध किया है।

प्रस्तुत कहानी 'महाराजा का इलाज' आधुनिक समाज की पूँजीवादी मनोवृत्ति पर आधारित है। उन्होंने गरीबी और अमीरी का भेदभाव तथा आर्थिक विषमता को समाज की समस्याओं का मूल कारण माना। महाराजा मोहना के घुटने आपस में जुड़ गए थे। पिछले नौ वर्षों से उनका इलाज चल रहा है। उनकी देख–रेख के लिए तथा इलाज के लिए डॉक्टरों की फौज तैयार रहती है लेकिन उन्हें जरा भी आराम नहीं। महाराजा की बीमारी को चित्रित करने के लिए लेखक ने व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है, जैसे –

"महाराजा जब कभी कोठी से रिक्शा पर बाहर निकलते तो रिक्शा खींचनेवाले चार कुलियों के साथ बदली के लिए अन्य चार कुली भी साथ–साथ दौड़ते चलते। सावधानी के लिए महाराजा के निजी डॉक्टर घोड़े पर सवार रिक्शा के पीछे रहते थे।"

सितम्बर के महीने में महाराजा जब पहाड़ से अपनी रियासत लखनऊ लौटते तो उनके प्रस्थान से पूर्व डॉक्टरों में हलचल मच जाती। उनके लिए कमरे बुक हो जाते। डॉक्टरों के लिए रिक्शा व बढ़िया घोड़े सुरक्षित कर लिए जाते। लोगों को न होटलों में स्थान मिलता और न उन्हें सवारियाँ ही मिलती थीं। बात फैल जाती कि महाराजा मोहना को देखने डॉक्टर आ रहे हैं। उपर्युक्त कथन में भी लेखक ने व्यंग्य का प्रयोग किया है। लेखक इसे राजरोग कहकर व्यंग्य करते है। महाराजा की बीमारी की चर्चा जिला कोर्ट की बार में, जिला मजिस्ट्रेट के यहाँ और गवर्नमेंट हाउस तक में थी। बम्बई मैडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉक्टर कौशल को भी डॉक्टरों के सम्मेलन में बुलाया गया था।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने कर्म से पलायन दिखाया है जो पूँजीवादी मानसिकता का प्रतीक है। एक स्थान पर लेखक इसी स्थिति को प्रकट करते है – "सब डॉक्टर अपनी फीस, आने जाने का किराया और आतिथ्य पाकर लौट जाते, परन्तु महाराज के स्वास्थ्य में कोई सुधार न होता।"

उपरोक्त वाक्य से पता चलता है कि जीवन में कार्य करने से बढ़कर प्रशस्ति व आतिथ्य पाना श्रेयस्कर है। एक अन्य स्थान पर लेखक कहते हैं – "चिकित्साशास्त्र के इतिहास में ऐसा रोग अब तक देखा–सुना नहीं गया। ऐसे राजरोग को कोई साधरण आदमी झेल भी कैसे सकता था!"

महाराजा एक ऐसे मरीज थे जो डॉक्टरों को आदेश दिया करते थे। महाराजा के सेक्रेटरी विनय ने डॉक्टर संघाटिया को सूचना दी कि "उनसे पहले आए डॉक्टर महाराजा की परीक्षा कर लें तो वे भी महाराजा की परीक्षा करने की कृपा करेंगे।" बत्तीस डॉक्टरों की एक सभा का आयोजन किया गया। जिसके बाद डॉक्टरों से

bodhiyla.com

अनुरोध किया गया कि भवे अपनी परीक्षा और निदान के सम्बन्ध में परस्पर विचार करके अपना मंतव्य लिख लें। इसके पश्चात् महाराजा सभा में उपस्थित होकर डॉक्टरों की राय सुनेंगे।

वास्तव में महाराजा की बीमारी मानसिक व्यथा थी, मानसिक जकड़न थी जिसके कारण उनके घुटने और सिर के दर्द का इलाज नहीं हो पा रहा था। डॉक्टर संघाटिया ने महाराज के रोग का अध्ययन किया। बुलेटिन का अध्ययन करने के पश्चात् उन्होंने इसे मानसिक ही अधिक बताया। उन्होने महाराज से कहा –

''मेरा विचार है कि महाराजा का यह रोग साधारण शारीरिक उपचार द्वारा दूर होना दुस्साध्य होगा .....।''

महाराजा को उस युवा डॉक्टर का कथन अच्छा लगा और उन्होने अपनी गर्दन ऊँची कर ली। डॉक्टर ने अपनी बात में किसी मेहतर के इलाज की चर्चा की और महाराजा से उसकी तुलना कर डाली। इस उदाहरण द्वारा लेखक ने पूँजीवाद व रूढ़िवाद पर करारा व्यंग्य किया है। ये पूँजीवादी लोग दोहरी मानसिकता रखते हैं। सम्पन्न लोग अपनी तुलना एक मेहतर से नहीं कर सकते। डॉक्टर संघाटिया समझ गए थे कि महाराजा की बीमारी मानसिक अधिक है। अतः उन्होने महाराजा के लिए शॉक ट्रीटमेंट का प्रयोग किया। अपनी बीमारी की तुलना एक मेहतर की बीमारी से होते ही महाराजा को आघात पहुँचा। वह यह कहते हुए चीख पड़े – ''निकाल दो बाहर बदजात को! हमको मेहतर से मिलाता है ......? निकाल दो बदजात को, डॉक्टर बना है।'' और महाराजा सेवकों द्वारा कुर्सी लाए जाने की प्रतीक्षा किए बिना ही काँपते हुए पाँवों से हॉल से बाहर चले गए।

डॉक्टर संघाटिया मुस्कराकर कहते हैं – ''खैर जो हो, बीमारी का इलाज तो हो गया ......।''

इस प्रकार लेखक ने इन प्रभुता सम्पन्न लोगों की मानसिकता को समझकर व्यंग्यात्मक शैली में इनके इलाज की बात कह कर अपनी बात समाज के समक्ष रखी है।

कहानी में निहित व्यंग्य को अच्छी तरह से स्पष्ट करना यथा योग्य स्थान पर स्पष्टीकरण के लिए उपयुक्त उदाहरण प्रस्तुत करना श्रेयष्कर।

Question 12

'कर्मनाशा की हार' कहानी के आधार पर पांडे जी का चरित्र चित्रण करते हुए स्पष्ट कीजिए कि उनका जीवन आदर्श सिध्दान्तों की नींव पर खड़ा था । [12 1/2]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

'कर्मनाशा की हार' पर कम छात्रों ने लिखा। पाण्डे जी का चरित्र स्पष्ट रूप से पूछा गया था पर कुछ छात्र–छात्राओं ने उसमें कहानी लिख कर स्पष्ट किया।

पण्डेजी का चरित्र आर्दश कैसे है यह बहुत कम छात्रों ने सपष्ट किया।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- कक्षा में कथा समझाते समय चरित्र के गुण–अवगुण भी समझाए जाऐं।
- मत्रागत अशुद्धियों पर ध्यान दें।
- चरित्र–चित्रण लिखने का अभ्यास कराया जाए।
- कथा का उद्धेश्य व सीख भी कक्षा में स्पष्ट करायी जाए।

bodhiyla.com

MARKING SCHEME

Question 12

डा० शिवप्रसाद सिंह की कहानी 'कर्मनाशा की हार' के भैरों पांडे एक प्रभावशाली चरित्र के व्यक्ति हैं। वे नईडीह गाँव के पंडित थे। उनके प्रभाव से गाँव में कोई किसी को सताने की हिम्मत नहीं करता था। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

जिम्मेदार भाई

माता–पिता दो साल के छोटे भाई की जिम्मेदारी पैरों से पंगु भैरों पांडे को सौंप कर चले गये। धन के नाम पर पिता कर्ज छोड़कर गये थे। भैरों पांडे ने कंधे से चिपकाए अपने दुधमुँहे भाई के पालन–पोषण में कोई कमी नहीं रखी। वे रुई से बिनौले निकालते, सूत कातते और सत्यनारायण की कथा बाँचते। इससे जो कुछ मिलता था, वह कुलदीप की पढ़ाई और कपड़े–लत्ते में खर्च करते। कुलदीप के बारे में भैरों पांडे कुछ सुनना नहीं चाहते थे। जब मुखिया जी उसके काले रंग को देखकर कहते –

''इसे भैरों पांडे के दादा की लौछार पड़ी है।''

वे मुखिया को मन ही मन कोसते।

सादा जीवन

उनका जीवन सादा था। मिट्टी की बनी पुरानी बखरी में रहते। बाढ़ के कारण उसकी हालत जर्जर हो गई थी। पंडिताई से जो कुछ मिलता उससे अपना और अपने भाई का पेट पालते। भाई के पालन–पोषण में उन्होंने कोई कमी नही रखी थी।

परिश्रमी

भैरों पांडे केवल पुरोहिताई से ही गुजारा नहीं करते थे। अपंग होते हुए भी व रुई से बिनौले निकालते, रुई को धुनते, सूत कातते और उससे जनेऊ बनाते। जजमानी भी करते थे।

आत्म–संयमी

उनके अंदर आत्म–संयम की भावना प्रबल थी। उनको अपने छोटे भाई कुलदीप और फूलमती के सम्बन्धों की जानकारी थी। वे कई बार क्रोध से तिलमिला उठते। कुलदीप को टोकते भी। जब कुलदीप उदास हो जाता तो वे स्वयं भी दु:खी हो जाते। पर अपने ऊपर काबू रखते।

क्षमाशील

जब गाँव के मुखिया की बेटी की शादी थी तब सारा गाँव वहाँ जमा था। पर कुलदीप और फूलमती महफ़िल से दूर आमों के पेड़ों के नीचे बातें कर रहे थे। भैरों पांडे ने उन्हें रँगे हाथों पकड़ लिया। फूलमती तो भाग गई। उन्होंने कुलदीप को समझाया, ''तुम गलत रास्ते पर पाँव रख रहे हो बेटा, तुमने कभी अपने बाप–दादों की इज्ज़त के बारे में भी सोचा है?

कुलदीप फूट–फूट कर रोने लगा। भैरों पांडे भी भाई से लिपट गये और उसकी पीठ सहला रहे थे। पश्चात्ताप के आँसू दिल की मैल धो देते हैं। उन्हें विश्वास था कि कुलदीप अब ठीक रास्ते पर आ जायेगा। उनके वंश की मर्यादा अपमान के तराजू में चढ़ने से बच जायेगी। उन्होंने कुलदीप को क्षमा कर दिया।

परिवार की प्रतिष्ठा का ध्यान रखने वाले

भैरों पांडे ने अपने बाप–दादा की प्रतिष्ठा का सदैव ध्यान रखा था। उनके साधन सीमित होने पर भी गाँव के लोग उनके दबदबे को मानते थे। जब उन्होंने विधवा फूलमती के बच्चा होने की खबर सुनी तो वे बड़े दुखी

bodhiyla.com

हुए और सोचने लगे कि कर्मनाशा की बाढ़ उनकी इस जर्ज़र बखरी को हड़पने नहीं, उनके पितामह की अमूल्य प्रतिष्ठा को हड़पने आई है।

सारी घटनाओं के बारे में सोचते हुए उनका मन तीव्र व्यथा से जलने लगा। वे बुदबुदाए ''पांडे के वंश में ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था।''

जब उन्होंने फूलमती और कुलदीप को आमों के पेड़ों के नीचे रँगे हाथों पकड़ा तो उसे अपने वंश की मर्यादा की याद दिलाते हुए बोले,

''तुमने कभी अपने बाप–दादों की इज्ज़त के बारे में सोचा है, बड़े पुण्य के बाद इस घर में जन्म मिला है। ....''

अंधविश्वास का विरोध करने वाले

लेखक ने ग्राम्य–समाज तथा उसमें व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वास का वर्णन किया है वहाँ घोर अज्ञान और अशिक्षा व्याप्त थी। ये अंधविश्वास समाज को खोखला कर देते हैं। इनका विरोध करने की शक्ति किसी में नहीं होती। कर्मनाशा के बारे में भी लोगों में एक विश्वास प्रचलित था कि यदि नदी में एक बार बाढ़ आ जाये तो बिना मनुष्य की बली लिए लौटती नहीं। नदी में पानी आने पर लोग मुखिया के घर इकट्ठे होते और गीत गाते। पर जब नदी अपना भयंकर रूप धारण कर लेती तो उसे शांत करने के लिए पाप–शांति के पूजा–पाठ होते। मनुष्यों की बली दी जाती। एक बार एक अंधी लड़की और एक अपाहिज बुढ़िया की भेंट दी गई। इस बार गाँववाले विधवा फूलमती और उसके बच्चे को नदी की भेंट करना चाहते थे। कर्मनाशा को प्राणों की बलि चााहिए। बिना बलि के बाढ़ नहीं उतरेगी। उसी की बलि क्यों न दी जाए जिसने पाप किया है? इसका विरोध करने का साहस किसी में नहीं था। भैरों पांडे भीड़ में से आगे बढ़े और अकेले ही बड़ी मजबूती से इसका विरोध किया और कहा –

'कर्मनाशा की बाढ़ दुधमुँहे बच्चे और एक अबला की बलि देने से नहीं रुकेगी, उसके लिए तुम्हें पसीना बहाकर बाँधों को ठीक करना होगा।''

जब मुखिया जी ने कहा कि पाप का फल और समाज का दण्ड तो झेलना होगा, इस पर पांडे जी बोले – ''जरूर भोगना होगा मुखिया जी ......किन्तु, मैं आपके समाज को कर्मनाशा से कम नहीं समझता। किन्तु, मैं एक–एक के पाप गिनाने लगूँ तो यहाँ खड़े सारे लोगों को परिवार समेत कर्मनाशा के पेट में जाना पड़ेगा। ......''

अंधविश्वासों का आंतक तब तक रहता है जब तक हम उनसे डरे रहते हैं। अंधविश्वास को निजी स्वार्थ के लिए भी लोग स्वीकार कर लेते हैं। इनसे मुक्ति का उपाय अंधविश्वास के उत्पन्न होने के कारण की जानकारी प्राप्त करना है।

भैरों पांडे ने वर्षो से फैले ग्रामीणों के अंधविश्वास को तोड़ा। कर्मनाशा के बारे में जो भ्रम लोगों में प्रचलित था, उसे दूर किया। इस प्रकार भैरों पांडे के द्वारा कर्मनाशा की हार हुई। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पांडे जी का चरित्र आदर्श सिध्दान्तों की नींव पर खड़ा था। अतः उनका विरोध करने का साहस किसी में भी नहीं था।

i) चारित्रिक विशेषताएँ बिन्दुवार

ii) आदर्श सिद्धान्तों पर प्रकाश

bodhiyla.com

ज्वालामुखी के फूल

Question 13

नन्द वंश के विनाश के लिए चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को ही क्यों चुना ? चन्द्रगुप्त की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए विस्तार से लिखिए । [12 1/2]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

इस प्रश्न का उत्तर अधिकांश परीक्षार्थियों ने ठीक और उपयुक्त लिखा। कुछ छात्रों ने पूर्वार्ध को विस्तार से लिखा और उत्तरार्थ पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। वर्तनी आदि की गलतियाँ भी देखने को मिलीं।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- कौन सी घटना क्या बताती है इस पर स्पष्ट रूप से चर्चा की जाए।
- मात्रागत अशुद्धियाँ कक्षा में सुधारी जाएं।

MARKING SCHEME

Question 13

आर्य शकटार द्वारा दान लेने के लिए आमंत्रित चाणक्य को दान शाला में उसके कुरूप होने के कारण भरी सभा में सम्राट् नन्द ने अपमानित किया था।

भरे दरबार में चाणक्य ने अपनी शिखा खोलकर प्रतिज्ञा की थी कि मैं, विष्णुगुप्त चाणक्य प्रतिज्ञा करता हूं कि जब तक अभिमानी नन्दों का समूल नाश नहीं कर दूँगा, तब तक फिर से शिखा नहीं बाँधूँगा।

चाणक्य के लिए नन्दों का विनाश करना कठिन नहीं था। सम्राट् की मृत्यु के बाद मगध की गद्दी के लिए एक वास्तविक राजा की आवश्यकता थी जिसके राज्य में प्रजा को अधिक से अधिक सुख मिले, प्रजा को काई कष्ट न हो।

कुशा–काँटों और झाड़–झखाड़ों से लहूलुहान, कुरूप चाणक्य एक वास्तविक राजा की खोज में वनों में भटकता फिर रहा था।

एक दिन अचानक नगर की ओर जाते समय चाणक्य को शोण नदी के मैदान में राजा का अभिनय करते हुए चन्द्रगुप्त से सामना हो जाता है।

किशोर चरवाहे और चन्द्रगुप्त इसी स्थान पर अपनी सभा जमाते और खेल खेलते। उस दिन चन्द्रगुप्त के गले में फूलों का बड़ा–सा हार पड़ा था। माथे पर चन्दन लगा था। उसने सिर पर भी फूलों का मुकुट पहन रखा था।

खेल शुरू हुआ। नीचे बैठे किशोरों ने उठकर आदर से प्रणाम किया। साथ ही जयजयकार गूँज उठी, राजा की जय हो।

राजा ने महामात्य से प्रजा का कुशलक्षेम पूछा। किशोर महामात्य ने उत्तर दिया कि किसमें साहस है जो प्रतापी राजा चन्द्रगुप्त मौर्य की प्रजा को दुःख दे। हमारे बलवान राजा की प्रजा पर कौन अत्याचार करेगा?

तभी एक स्त्री की जोर–जोर से रोने की आवाज सुनाई दी

राजा के साथ–साथ सभी किशोरों की आँखें उस ओर उठ गई –– एक स्त्री गोद में छोटा सा बच्चा लिए आगे–आगे तेजी से चली आ रही थी, पीछे–पीछे एक कमजोर–सी स्त्री रोती हुई दौड़ रही थी। वह बार–बार आगे खड़ी होकर बच्चे वाली स्त्री को रोक लेती, पकड़ती, हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाती और उसके पाँव पकड़कर लटक जाती। पर बच्चे वाली स्त्री बार–बार धक्का–मुक्की करके छुड़ा लेती और उसे ठोकर मारकर तेजी से बढ़ चलती। कमजोर स्त्री और जोर से रोने लगती और फिर लड़खड़ाती हुई उसके पीछे लग जाती।

bodhiyla.com

राजा ने आज्ञा दी कि दोनों स्त्रियों को पकड़ कर हमारी सभा में उपस्थित करो। हम उसके दुःख का कारण जानना चाहते हैं।

नगर की ओर जाते चाणक्य ने किशोर राजा की आज्ञा सुनी। कौतुकवश चाणक्य राजसभा के निकट आ खड़ा हुआ।

आगे—आगे चलती स्त्री चिढ़कर घमंड के साथ उन्हें धमकाने लगी। ये कैसे दिन आ गए हैं। कल के छोकरे ये चरवाहे तक पथिकों पर डाका डालने लगे हैं। मैं राजपुरुषों से कहूँगी। प्रजा पर इस तरह का अत्याचार .....।

महामात्य बने किशोर ने डपट कर कहा, चुप रह। राजा चन्द्रगुप्त के होते हुए भला किसमें इतना साहस है कि प्रजा पर अत्याचार करे।

राजा ने महामात्य से कहा कि इनसे पूछो, क्यों लड़ रही हैं? हम न्याय करेंगे।

क्रमशः दोनों ही स्त्रियों ने यह दावा किया कि वह बच्चा उनका है । बच्चा एक था, और दावेदार दो ।

महामात्य ने सिर झुकाकर राजा से निवेदन किया कि न्याय करें।

चन्द्रगुप्त के चेहरे पर गहरी रेखाएँ खिंच गई । पास खड़ा चाणक्य भी परेशान हो गया। भला इस झगड़े का निर्णय कैसे होगा , यह किशोर राजा क्या न्याय करेगा? चाणक्य कौतूहल के साथ चन्द्रगुप्त की ओर देखने लगा।

चन्द्रगुप्त की तीखी दृष्टि बारी—बारी से दोनों स्त्रियों के चेहरे पर दौड़ती रही, पर कुछ भी अनुमान नहीं लग पाता था। दोनों ही बच्चें के लिए तड़प रही थी। दोनों ही रो रही थीं। दोनों अपने—अपने हठ पर अड़ी थीं।

सहसा चन्द्रगुप्त को एक तरकीब सूझी। उसने आज्ञा दी वधिक को बुलवाओ। खेल में कभी वधिक की आवश्यकता नहीं पड़ी थी, इसलिए किसी किशोर को वधिक नियुक्त भी नहीं किया गया था।

किशोर महामात्य को सहसा उपाय सूझा उसने तुरन्त ही पास खड़े काले कुरूप चाणक्य को संकेत करके बुलाया। कौतुकवश चाणक्य वधिक का अभिनय करने के लिए प्रस्तुत हो गए।

राजा ने वधिक को आदेश दिया कि इस बच्चे को बीच से चीरकर इन दोनों स्त्रियों को बराबर—बराबर बाँट दे।

दूसरी स्त्री दहाड़ मारकर रो पड़ी। बोली —मेरे लाल को मारो मत। तुम उसी को दे दो। मेरा लाल जीता तो रहेगा।

चन्द्रगुप्त ने समझ लिया कि बच्चा इसी स्त्री का है। उन्होंने महामात्य को आज्ञा दी कि बच्चा इसी स्त्री का है। यही माँ है। बच्चा इसे दे दो। और उस निर्मम स्त्री को ले जाकर राजपुरुषों के हाथ सौंप दो। उसे उसकी करनी का दण्ड मिलेगा।

चाणक्य उस किशोर राजा के व्यक्तित्व, नेतृत्व—क्षमता और विलक्षण बुद्धि को देखकर आश्चर्यचकित हो गए। जिस समस्या का समाधान विद्वान् चाणक्य नहीं खोज पाए थे, उसे किशोर चन्द्रगुप्त ने क्षण भर में खोज लिया। उन्हें विश्वास हो गया कि जिस वास्तविक राजा की उन्हें तलाश है वह यही किशोर चन्द्रगुप्त ही है।

खेल खत्म होने पर राजा पगडंडी पर अकेला ही बस्ती की ओर चला जा रहा था। चाणक्य लपककर उसके पीछे—पीछे चलने लगे।

उसके घर पहुँच कर चाणक्य ने चन्द्र की माँ से चन्द्रगुप्त के बारे में राजसभा में घटी दो घटनाओं का वर्णन सुना। उसकी निर्भीकता, साहस तथा महत्त्वाकांक्षा को प्रत्यक्ष देखकर चाणक्य ने नन्दवंश के विनाश के लिए चन्द्रगुप्त को चुना था। वह चाहते थे कि चन्द्रगुप्त अपने पिता के हत्यारे का बदला स्वयं ले।

bodhiyla.com

चन्द्रगुप्त में राजा के सभी गुणों को देखकर ही वे देवी मुरा से कहते हैं कि मुझे अपनी प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिए एक राजा चाहिए। वह राजा है तेरा पुत्र। तक्षशिला के विद्यालय में मैं स्वयं इसे राजनीति की शिक्षा दूँगा। अर्थशास्त्र का ज्ञान कराऊँगा। धरती को जैसा राजा चाहिए, वह मैं दूँगा, माँ तू चन्द्रगुप्त को मेरे साथ जाने दे।

मैं विष्णुगुप्त चाणक्य, अर्थशास्त्र का आचार्य तुझसे दान माँग रहा हूँ। धरती के लिए एक राजा दे। दे दे, माँ!

चन्द्रगुप्त की विशेषताएँ

चन्द्रगुप्त का भव्य व्यक्तित्व था। वह गम्भीर, स्वाभिमानी, निडर, निर्भीक, आत्मविश्वासी, धैर्यवान, एकाग्रचित्त, प्रतिभाशाली, महत्त्वकांक्षी, स्पष्टवक्ता, तर्क बुद्धि का धनी और प्रत्युत्पन्नमति तथा विलक्षण बुद्धि सम्पन्न बालक था। विद्वानों के प्रति आदर भाव आदि उसकी प्रमुख विशेषताएँ थीं।

खेल व्यवहार में चन्द्र गुप्त, नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, कुशाग्रता, प्रभाव, उत्साह, प्रत्युत्पन्नमति न्याय सामर्थ्य (नीर–क्षीर विवेक रखने वाला) निर्भीक साहसी और महत्त्वाकांक्षी व्यक्तित्व सम्पन्न किशोर में राजोचित सभी गुण अस्तु चन्द्रगुप्त को ही नन्द के विनाश के लिए चुना।

Question 14

'साँझ को मौका देखकर चन्द्रगुप्त चुपचाप बाहर निकल पड़ा । इधर उधर देखता, बड़ी सावधानी से वह सामन्त देवदत्त के यहाँ पहुँचा ।" [12 1/2]

चन्द्रगुप्त इस समय कहाँ पर है? वह सामन्त देवदत्त के यहाँ क्यों गया है ? क्या उसे अपने उध्देश्य में सफलता मिली ?

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

बहुत कम परीक्षार्थियों ने इस प्रश्न को लिखा। छात्रों ने इस प्रश्न में चन्द्रगुप्त का सामन्त देवदत्त से मिलने की घटना का वर्णन किया। वह वहाँ क्यों गया भी स्पष्ट किया परन्तु क्या वहाँ वह अपने उद्धेश्य में सफल रहा–इसका उत्तर कुछ छात्रों ने नहीं लिखा। मात्राओं की त्रुटियाँ देखने को मिलीं।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- 'ज्वालामुखी के फूल' एक ऐतिहासिक नाटक है। इसकी घटनाओं को जैसा वर्णित है, वैसा ही लिखने का प्रयास कराना चाहिए। स्वयं के अनुसार इसमें परिवर्तन न किया जाए।
- प्रश्न के प्रत्येक पहलु पर लिखना आवश्यक बताया जाए।
- सभी घटनाओं से जुड़ी बातों पर चर्चा की जाए।

bodhiyla.com

MARKING SCHEME

Question 14

चन्द्रगुप्त इस समय तक्षशिला में है।

योजना के अनुसार चन्द्रगुप्त को तक्षशिला में तीन दिन रुकना था। इन्हीं तीन दिनों में उसे किसी प्रकार अपने मित्रों को और भी घनिष्ठ बनाना है।

आचार्य कौटिल्य ने पंचनद प्रदेश के राजाओं को जो आश्वासन दिया है उस पर ये लोग चन्द्रगुप्त की स्वीकृति चाहते हैं। सामन्त देवदत्त के माध्यम से उसका उन लोगों से मिलना संभव हो सकता है।

चाणक्य ने पहले ही सामन्त देवदत्त को समझा दिया है कि इस कार्य में उसकी क्या भूमिका है तथा चन्द्रगुप्त से उनको कैसे मिलवाना है ।

चन्द्रगुप्त आज इसी उद्धेश्य की पूर्ति के लिए देवदत्त के यहाँ गया है।

चन्द्रगुप्त बड़ी सावधानी से सामन्त देवदत्त के यहाँ पहुँच गया है । चन्द्र को देखते ही सामन्त देवदत्त बहुत प्रसन्न हुआ और उसे ह्रदय से लगा लिया।

सामन्त ने सूचित किया कि युवराज मलयकेतु तक्षशिला में ही है। आचार्यो का दर्शन करके वह शीघ्र ही अपनी राजधानी की ओर लौटने वाले हैं। उनसे अच्छा माध्यम भला क्या होगा।

चन्द्रगुप्त प्रसन्न हो गए। बोले, कब दर्शन होंगे? इतने में ही रथों के आने की ध्वनि सुनाई पड़ी। सामन्त देवदत्त ने गवाक्ष से झांककर देखा, फिर बोले, बस आ ही गए।

देवदत्त ने चन्द्रगुप्त को समझाते हुए कहा कि तुमसे उनको मिलाकर मैं किसी बहाने से यहाँ से चला जाऊँगा। उतनी देर में तुम बात कर लेना।

जब चन्द्रगुप्त ने पूछा कि यहाँ किसी प्रकार की असुविधा तो नहीं होगी? देवदत्त ने हँसते हुए कहा, नहीं। भगवान् कौटिल्य की आज्ञा से मैंने पहले ही युक्ति कर दी है। बाहर का प्रहरी कुछ सुन नहीं सकता और भीतर तुम दोनों की सेवा में जो परिचारिका रहेगी, वह गूँगी और बहरी दोनों ही है। आवश्यकता पड़ने पर तुम्हीं संकेत करके उसे बुलाना। कोई आज्ञा देनी हो तो तुम्हीं संभालना। युवराज मलयकेतु को इसका आभास न होने पाए तो अच्छा ही है। कहीं वह इसे अपना अपमान समझकर मुझ पर रुष्ट न हो जाएँ।

युवराज मलयकेतु के आने पर सामन्त देवदत्त ने चन्द्रगुप्त से उनका परिचय कराया।

पूर्व योजना के अनुसार द्वारपाल ने सामन्त देवदत्त को सूचना दी कि महाराज आम्भि ने तत्काल आपको बुलाया है।

सामन्त देवदत्त, युवराज और चन्दगुप्त से क्षमा माँग कर उनको एकान्त में बात करने का अवसर देकर चले गए।

परिचारिका ने सुगन्धित भोजन सामग्री सजा दी। युवराज बोले, ग्रहण करें, आर्य चन्दगुप्त।

चन्द्रगुप्त ने आग्रह स्वीकार करते हुए दूध के पुए का एक टुकड़ा उठा लिया और खाने लगे।

वार्त्तालाप के बीच. मलयकेतु के मुँह से अपने लिए 'देव' का सम्बोधन सुनकर चन्द्रगुप्त गम्भीर हो गए । संभलकर उस पद के अनुकूल ही व्यवहार करने लगे। चन्द्रगुप्त को लगा मानो किसी जादू के बल से वह सहसा ही बहुत ऊँचे आसन पर बैठ गए हों।

चन्द्रगुप्त ने गम्भीर स्वर में पूछा, युवराज को संवाद तो मिल ही चुका होगा ?

bodhiyla.com

हाँ। फिर बोला आज ही पिताश्री के भेजे चर ने बताया कि तक्षशिला में ही देवदर्शन का भी सौभाग्य मिलेगा। सामन्त की ओर से निमंत्रण पाते ही मैं समझ गया था।

क्यों? सामन्त के साथ क्या मेरे सम्पर्क की बात यहाँ सभी जानते हैं? चन्द की भौंहे टेढ़ी पड़ गई।

नहीं, नहीं! युवराज ने अपनी गलती सुधारते हुए कहा कि मुझसे कहने में त्रुटि हो गई। महाराज के दूत ने ही मुझे बताया था कि सामन्त इसमें सहायक होंगे।

चन्द्रगुप्त ने सुगन्धित जल पीते हुए कहा कि युवराज एक बार तुम्हारे मनोरम प्रदेश की यात्रा करने की बड़ी इच्छा है।

युवराज ने कहा कि कार्य सिध्द होने पर देव हमारे यहाँ अतिथि बनकर तो पधारेगें ही।

चन्द्रगुप्त उसकी चतुरता को समझ गए । राजा पर्वतक तो अपने को उसके बराबर का ही शासक समझेंगे, तभी तो यह मगध–सम्राट् को अपना अतिथि बना रहा है। चन्द्रगुप्त मन ही मन हँसा। भगवान कौटिल्य के मन में पता नहीं क्या है? कौन जाने, किसी दिन खड्ग लेकर उसका राज्य जीतने के लिए भी तो वहाँ जाना पड़ सकता है।

ऊपर से मुस्कराकर चन्द्रगुप्त ने कहा, हम उस दिन की प्रतीक्षा करेंगे।

हम भी करेंगे, देव! युवराज ने ऐसा कहकर जैसे सब कुछ चन्द्रगुप्त पर ही डाल दिया। युवराज फिर बोला, मैं पूजनीय महाराज से क्या निवेदन करूँगा?

विजेता की भाँति हाथ बढ़ाकर चन्द्रगुप्त ने कहा, हम अपनी ओर से दिया गया हर वचन पूरा करने को तत्पर हैं ।

चन्द्रगुप्त ने युवराज मलयकेतु से फिर पूछा, महाराज पर्वतक यही आश्वासन चाहते हैं न ?

युवराज ने कहा, केवल यही । और अब महाराज की आज्ञा से मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि जहाँ, जिस समय भी हमारी आवश्यकता होगी, वहाँ देवदृष्टि उठाते ही हमें तत्पर पाएँगे । चन्द्रगुप्त और राजा पर्वतक के बीच मौखिक संधि हो गई ।

कार्य पूरा होते ही चन्द्रगुप्त उठ खड़ा हुआ और बिना सामन्त देवदत्त की प्रतीक्षा किए मुस्कराकर बाहर निकल पड़ा ।

इस तरह चन्द्रगुप्त के तक्षशिला आने का उध्देश्य पूरा हो गया और उसे अपने उध्देश्य में सफलता मिल गई।

i) चन्द्रगुप्त इस समय तक्षशिला में है

ii) आचार्य चाणक्य की योजनानुसार मित्र राजाओं से मिलकर घनिष्ठता बढ़ाने में सामन्त देवदत्त का सहयोग अपेक्षित था अतः अपने इष्टकार्य को सम्पादित करने के उद्धेश्य से सामन्त देवदत्त के यहाँ गया था।

iii) हाँ उसे अपने उद्धेश्य में सफलता मिली।

Question 15

'अतिथि की इच्छा पूरी करने के लिए मुझे सबसे आगे रहना पड़ेगा । अतिथि कौन है, चन्दगुप्त ने उसकी इच्छा किस तरह से पूरी की थी ? समझाकर लिखिए । [12$^{1/2}$]

bodhiyla.com

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

छात्रों द्वारा समय की सीमा के अनुसार उत्तर नहीं लिखे गए। कहीं उत्तर अति विस्तृत थे तो कहीं संक्षिप्त। मात्रागत अशुद्धियाँ भी देखने को मिलीं।

अध्यापकों के लिए सुझाव

– ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यासों को पढ़ाने में विशेष रूचि लें।
– पंक्तियों का सन्दर्भ समझाया जाए। मूल पृष्ठभूमि अवश्य समझायी जाए। तब ही छात्र प्रश्नोत्तर लिख सकेंगे।
– मात्रागत अशुद्धियाँ सुधारने के लिये कक्षा में अभ्यास कराऐं।

MARKING SCHEME

Question 15

अतिथि' सेल्यूकस की पुत्री हेलेन है।

सम्राट् चन्द्रगुप्त ने चरों से सुना था कि यवनों की राजकुमारी हेलेन मुझे देखना चाहती है। उसी दिन सम्राट् ने निश्चय कर लिया था कि वह युद्ध में सबसे आगे चलकर उसे अपना दर्शन देगा।

आचार्य कौटिल्य, महामात्य राक्षस तथा सम्राट् चन्द्रगुप्त युध्द रणनीति पर विचार कर रहे थे। तभी राक्षस ने कहा कि भगवान् कौटिल्य की युक्ति का विवरण भी यथावत् दे चुका हूँ। अब सम्राट् की जैसी आज्ञा हो।

चन्द्रगुप्त हँस पड़ा और बोला, ''महामात्य राक्षस कहाँ रह गए?''

''जहाँ राक्षस को होना चाहिए।'' राक्षस बोले, ''हर युध्द में राक्षस सेना में सबसे आगे रहता आया है, इस बार भी...... ।''

''नहीं, नहीं। महामात्य तो मेरा ही अधिकार छीन रहे हैं।'' चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को समझाया कि नीति का निर्णय करने का अधिकार महामात्य राक्षस को ही है, वृषल!

''नीति के दो–दो आचार्य मिलकर मुझ सैनिक को लूट रहे हैं। नहीं, नहीं। यह अत्याचार नहीं चलेगा।''

''मैं सम्राट् भी हूँ, अतः मेरा कर्त्तव्य है कि अतिथि की इच्छा पूरी करूँ।''

राक्षस ने चकित होकर कहा, ''यह कैसा तर्क, सम्राट्?''

''हाँ, मैं अपने पक्ष का तर्क दे रहा हूँ। अतिथि की इच्छा पूरी करने के लिए मुझे सबसे आगे रहना पड़ेगा।''

राक्षस ने कहा, ''महाप्रभु का तर्क कैसे काट सकता हूँ? आचार्य कौटिल्य रक्षा करें मेरी!''

कौटिल्य हँस पड़ा, ''मैं तो इतना ही कह सकता हूँ महामात्य, कि वृषल बचपन से ही हठी है । हाँ, मुझे एक नई चिन्ता हो रही है।''

''मेरे रहते आचार्य को चिन्ता,'' चन्द्रगुप्त बोला। ''तू ही तो चिन्ता का कारण है, वृषल। यदि उस अतिथि की यह इच्छा जीवन भर की इच्छा बन गई तो? कहीं यवन राजपुत्री हेलेन जीवन–भर प्रतापी मगध–सम्राट् का नित्य दर्शन पाने को व्यग्र हो उठी तो .....''

चन्द्रगुप्त ने लज्जित होकर मुँह फेर लिया।

boohiyla.com

चाणक्य ने कहा, ''अब इस ब्राह्मण से आप लोगों ने और तो सभी कुछ छीन लिया है, केवल इतना ही हाथ में रह गया है –– यवन राजकन्या का विवाह मगध सम्राट् से करा दूँ! तो इसी क्षण एक भव्य राजभवन बनवाने की आज्ञा दे दीजिए। महामात्य, यह भी सही।''

सम्राट् ने पूछा, ''तो पहले विवाह होगा अथवा युध्द?''

''क्षत्रियों की परम्परा के अनुसार पहले युध्द, फिर विवाह !''

सबसे पहले पहाड़ जैसे ऊँचे गजराज पर विराट् काय देवता की तरह खड़ा मगध–सम्राट् युध्दक्षेत्र में आया। हेलेन ने रथ पर बैठे अपने पिता को झकझोर कर कहा, ''जैसे स्वयं देवता जूपिटर उतर आया हो, देखा।''

''तू जा, मैं इस पशु को बाँधकर तुझे उपहार में दूँगा।'' सेना में युध्द के बाजे बज उठे।

ठीक उसी समय चन्द्रगुप्त का शंख गरज उठा। यवन सेना को भारतीय व्यूहों में फँसाकर यवन कौशल से काटा जाने लगा। उस अद्‌भुत युध्द के कारण सेल्यूकस को काठ–सा मार गया।

आधी सेना कटा चुकने के बाद व्यूह में फँसे हुए सेल्यूकस की आँखों पर पड़ी दिग्विजय के सपने की धुँध छँट गई। थका–हारा सेल्यूकस चन्द्रगुप्त के पास सन्धि का प्रस्ताव भेजकर अपने एकान्त शिविर में बेहाल पड़ा था । राजकन्या हेलेन कोने में खड़ी विजेता को तड़पते देखती रही।

सन्धि हो गई। सेल्यूकस का सम्मान करने के लिए मगध सम्राट् ने अनेक हाथी, रथ, घोड़े तथा मूल्यवान रत्न उपहार में दिए।

सेल्यूकस ने अपने जीते हुए प्रदेश का बहुत बड़ा भाग मगध सम्राट् को दिया। अपनी पुत्री हेलेन का हाथ सम्राट् के हाथों में सौंप दिया। इस तरह से सम्राट् ने हेलेन को अपनी पत्नी बनाकर उसकी इच्छा पूरी कर दी।

i) अतिथि यवन राजकन्या हेलेन (सेल्यूकस की पुत्री)

ii) हेलेन सम्राट चन्द्रगुप्त को देखना चाहती थी इस कार्य सम्पादन में हर सम्भव प्रयास द्वारा स्थिति को निर्विघ्न और निरापद बनाने में आचार्य कौटिल्य, आमात्य राक्षस औश्र सम्राट चन्द्रगुप्त की भूमिका पर सम्यक प्रकाश डालना।

iii) सम्राट चन्द्रगुप्त ने यवन राजकन्या कु॰ हेलेन को दर्शन देने के साथ–साथ अपनी पत्नी स्वीकार कर इच्छा पूरी की।

bodhiyla.com

General Comments:

(a) प्रश्न पत्र में कौन से विषय परीक्षार्थियों को कठिन लगे?

- जीवन में सुख समृद्धि हेतु किसी व्यवसाय का चुनाव।
- आज के टूटते परिवार।
- वाक्य शुद्धि।
- सूरदास की भक्ति भावना।
- निर्मला में 9th प्रश्न शीर्षक की सार्थकता।
- ज्वालामुखी से प्रश्न – 14

(b) प्रश्न पत्र में कौन से विषय परीक्षार्थियों के लिए अस्पष्ट रहे?

- किसी व्यवसाय को चुनना – समझ न पाने के कारण काल्पनिक बातें लिखी गयीं।
- 'पानी में आग लगाना' मुहावरा बच्चों को अस्पष्ट लगा।
- प्रश्न 11 में व्यंग्यभाव।

(c) विद्यार्थियों के लिए सुझाव :–

- प्रश्नों को ध्यान से पढ़कर, सभी बिन्दुओं पर विचार–विमर्श उपरान्त लिखे।
- निबन्ध में पक्ष–विपक्ष पूछे जाने पर किसी एक पहलू पर ज़ोर दें।
- मात्रागत शुद्धियों पर ध्यान दें।
- व्याकरण भाग पर अधिक ज़ोर दें।
- उपन्यास कहानी व कविता के अंश उत्तर में समाहित करें।
- प्रश्न की भाषा पढ़कर प्रत्येक बिन्दु पर लिखें।
- समय सीमा का ध्यान रखें।
- निबन्ध में विषयोचित उदाहरण व कविता अंश भी शामिल करें।

bodhiyla.com